श्री एम. आर. देसाई आर्ट्स एण्ड इ. इ. एल. कोसाडिया कॉमर्स कॉलेज, चीखली

संस्कृत साहित्य में युगबोध : राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक : १९ मार्च, २०१६

गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर एवं विमल उच्चतर केळवणी मंडळ संचालित श्री एम. आर. डी. आर्ट्स और इ. इ. एल. के. कॉमर्स कॉलेज के संयुक्त तत्त्वावधान में 'संस्कृत साहित्य में युगबोध' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक १९ मार्च, २०१६ को संस्कृत विभाग के उपक्रम में किया गया।

संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में ब्रह्माकुमारी चीखली केन्द्र के शांता बहन तथा विमल उच्चतर केळवणी मंडळ के ट्रस्टी श्रीमती सुवर्णाबहन एवं वेद-संदेश के तंत्री डॉ. नरेश भट्ट के करकमलों से दिप प्रज्वलन किया गया। कुमारी पूनम रावल ने शंकराचार्य द्वारा रचित स्तुति के गान से समस्त परिसर को भावमय बना दिया। कॉलेज की कन्याओं ने गणेश वंदना द्वारा परमात्मारूप मेहमानों की अर्चना की।

आचार्या महोदया फाल्गुनीबहन देसाई ने आगंतुक अतिथिओं का, सारस्वतविशेषों का स्वागत करते हुए काव्यमय बानी में संस्कृत एवं संस्कृति के प्रति अपनी श्रद्धा प्रगट की। तेजः शब्द के उच्चारण मात्र से ही व्यक्ति में जागृत होने वाली भीतरी चेतना को, संस्था के आद्यस्थापक मोहनकाका को भावांजलि देते हुए इस ज्ञानयज्ञ में आहुति देने वाले सभी भाग्यशाली सहभागियों का धन्यवाद करते हुए अतिथिविशेषों का, सारस्वतविशेषों का स्वागत किया।

सारस्वत अतिथिविशेष वेद - सन्देश के तंत्री डॉ. नरेश भट्ट ने संस्कृत में छिपी सर्वश्रेष्ठता को अपनाने का आवाहन करते हुए, सभागार में उपस्थित विद्वतजनों को एवं छात्रों को संस्कृत की विशेषता की झांकी करवाते हुए कहा की पाश्चात्य देशों ने संस्कृत से नाता जोड़कर, उसके रहस्यों की खोज कर अपना अधिकार जताना शुरू कर दिया है। अतः हमें जागृत होकर संस्कृत को अपनाना है और अपना दायित्व निभाना है।

संगोष्ठी संयोजिका संस्कृत विषय की अध्यक्षा प्रा. नयना नायक ने संस्कृत साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री भाग्येश झा, अकादमी के महामात्र श्री मनोज ओझा, कॉलेज के पथदर्शक नवयुवा मेनेजिंग ट्रस्टी श्री दर्शन भाई देसाई का ऋण स्वीकार करते हुए प्रस्तुत संगोष्ठी की भूमिका से सब को अवगत कराया। साहित्य-समाज और साहित्यकार एक दूसरे की परछाई बनकर समाज की दिशा व दशा बदल सकते हैं। प्रत्येक युग की चेतना साहित्यके माध्यम से समाज का आईना बनकर समस्त मानव संस्कृति एवं सभ्यता का ऐतिहासिक प्रमाण बन जाती है। वैदिक साहित्य से आधुनिक संस्कृत साहित्य तक की चेतना को समाज के सामने रखकर भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत की अभिन्नता को प्रगट करना आज भी इतना ही आवश्यक है।

उद्घाटनसत्र के विशिष्ट सारस्वत व्याख्याता डॉ. हर्षदेव माधव, जिन्होंने आधुनिक संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपनी रचनाओं द्वारा विदेश में भी गुजरात एवं संस्कृत भाषा का नाम उजागर किया है। उन्होंने कालिदास, अदि से शुरू हुई संस्कृत साहित्य की परंपरा में युगबोध किस प्रकार छिपा है इस बात की विवेचना प्रस्तुत करते हुए बताया कि काव्य का प्रयोजन 'व्यवहारविदे' तथा 'कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे' था और है, जो आज युगबोध नामान्तर से प्रचलित हुआ है। आधुनिक अलंकारशास्त्र के विवेचकों के लिए ग्रथित अपनी कृति 'वागीश्वरीकण्ठसूत्रम्' में चार प्रकार के कवि अपने युगबोध को किस प्रकार प्रस्तुत करते है इसे सोदाहरण स्पष्ट किया। आधुनिक तनावग्रस्त भावविश्व को कवि अपनी कविता में किस प्रकार आकारित करता है इस बात को भी सहज, सरल एवं मार्मिक रूप से प्रस्तुत किया। वास्तववादी व्यासमुनि, आदर्शवादी वाल्मीकि, मैत्रीप्रधान शूद्रक तथा कालिदास को मुदिताप्रधान कवि घोषित करते हुए वर्तमान कवि को आत्मलक्षी बताया गया। उन्होंने बताया की भारत में सबसे पहले संस्कृत में ग़ज़ल लिखी गयी। और लेनिन पर महाकाव्य लिखनेवाला भी संस्कृत कवि ही था। वर्तमान युगीन नारी की पीड़ा को व्यंग एवं कटाक्ष के साथ व्यक्त करते हुए उन्होंने नारीवादी कवि होने का भी प्रमाण दिया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटक शांता बहन एवं समारोह की अध्यक्षा ट्रस्टी श्रीमती सुवर्णा बहन जी ने हार्दिक बधाई के साथ शुभकामनाएँ दी।

संगोष्ठी के सहसंयोजक श्री छिवु भाई पटेल ने समारोह में उपस्थित सभी अतिथिविशेषों का, विषयविशेषज्ञों का, मेनेजिंग ट्रस्टी श्री दर्शनभाई एवं ट्रस्टी श्रीमती सुवर्णाबहन तथा आचार्या डॉ. फाल्गुनीमहोदया और साहित्य अकादमी के महामात्र श्री मनोज ओझा, संस्कृत अकादमी के अध्यक्ष श्री भाग्येश झा जी का ऋण स्वीकार किया।

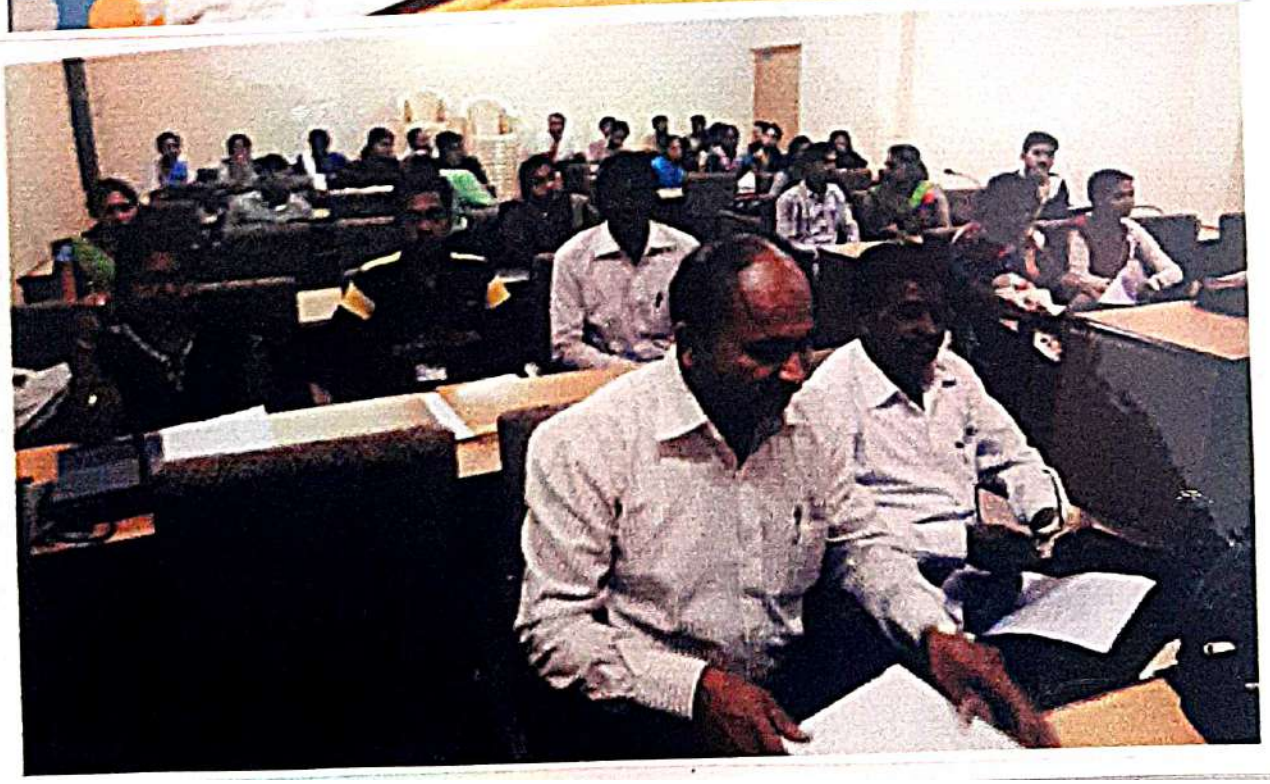

प्रथम सत्र में वेद - विज्ञान अकादमी, अहमदावाद के अध्यक्षा डॉ. प्रज्ञा जोशी ने 'युगबोध - वैदिक वाङ्गमय के परिप्रेक्ष्य में' इस विषय पर अपना मननीय उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमें कुदरती तत्वों से वोध लेना चाहिए। यज्ञ समष्टि के लिए होता है। वेद मानव सभ्यता का प्राचीनतम ग्रन्थ है। उसमे मानव, समाज एवं राष्ट्र के कल्याणकारी बोधसूत्र संगृहीत है। प्राणीमात्र के लिए शाश्वत मूल्यों का निधि अपने मंत्रो में ग्रथित करते हुए महर्षिओं ने युगयुगान्तरों के लिए वोध दिया था वहि आज का परम सत्य है।

राजस्थान कोटा की राजकीय कॉलेज में सेवारत, आधुनिक संस्कृत की आलोचना द्वारा संस्कृत सर्जकों को प्रोत्साहित करनेवाली डॉ. सुदेश आहुजा जानीमानी विवेचिका है। प्रस्तुत संगोष्ठी में 'अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में युगबोध' इस विषय पर मननीय वक्तव्य देते हुए उन्होंने आधुनिक काल की वास्तविक समस्याओंको साहित्य द्वारा समाज तक पहुंचा कर अपना उत्तरदायित्व निभानेवाले विद्वान लेखक डॉ. राजेन्द्र मिश्र, डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, डॉ. हर्षदेव माधव, डॉ. रवीन्द्र पण्डा, प्रशष्यमित्रशास्त्री, आदि की कृतिओं का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए समसामयिक प्रश्नों की ओर सबका ध्यानाकर्षित किया। उनके वक्तवय से अनेक आधुनिक संस्कृत कृतिओं का परिचय भी प्राप्त हुआ।

प्रथम सत्र की अध्यक्षा डॉ. फाल्गुनी महोदया ने डॉ. प्रज्ञा जोशी एवं डॉ. सुदेश आहुजा द्वारा प्रदर्शित विचारों की भूरिभूरी प्रशंसा की तथा वेद में निहित ऋत तत्त्व द्वारा मानव जीवन के पहलूँओ पर प्रकाश डाला।

भोजनविराम के पश्चात दोपहर की द्वितीय वैठक का दौर शुरू हुआ। जिसमें प्रथम विद्वान वक्ता थे डॉ. रवीन्द्र खाण्डवाल। अल्पायु में अनेक सिद्धिओं से सम्मानित रवीन्द्रजी ने 'श्रीमद्भगवद्गीता में युगवोध' इस विषय पर आधुनिक युगीन दृष्टिकोण से रसपूर्ण व्याख्यान दिया। श्रीमद्भगवद्गीता शकवर्ती सर्वकालीन ग्रन्थ है। निजी अस्तित्व की खोज, कर्मविवेक, किस प्रकार किससे व्यवहार करना है इन सव वातों को कृष्ण एवं अर्जुन के माध्यम से समझाया। सभागार में उपस्थित विद्वत्जनों से प्रस्तुत विषय पर रसपूर्ण चर्चा भी हुई।

संगोष्ठी के प्रपत्र पठन के तृतीय सत्र को तीन विभागों में विभाजित किया गया। डॉ. मयूरी भाटिया, डॉ. शोभना सोलंकी तथा डॉ. सूरवीरसिंह की अध्यक्षता में भारी संख्या में उपस्थित प्राध्यापकों तथा शोधछात्रों ने अपने मौलिक प्रपत्र पठन किये। इन तीनो सत्रों का संचालन प्रा. इन्दिरा पटेल, डॉ.भावना चांपानेरी, डॉ. दीपक पटेल ने भलिभाँति किया, एवं प्रपत्र पठन करते हुए शोधछात्रों को नैतिक रूप से प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम की चरमसीमा अर्थात समापन बैठक की अध्यक्षा वीर नर्मद दक्षिण गुजरात युनिवर्सिटी, सूरत के विनयन विभाग के डीन एवं रॉफेल आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज के आचार्यामहोदया डॉ. हेमाली देसाई थे। शाम को संगोष्ठी अपने अंतिम लक्ष्य की ओर थी। उत्साह यथावत था। इसी उत्साह को पुनः पुनः तेजस्वी बनाने का शुभ संदेश देते हुए डॉ. हेमालीमहोदया ने संगोष्ठी की सफलता की सबको बधाई दी। श्री शंकरभाई पटेल द्वारा किये गए आभार दर्शन के पश्चात राष्ट्रगान के साथ संगोष्ठी पूर्ण घोषित की गई। संयोजिका प्रा. नयना नायक एवं सहसंयोजक छिबु भाई पटेल को संगोष्ठी के लिए प्रोत्साहित करने वाले आचार्या डॉ. फाल्गुनीमहोदया, ट्रस्टी श्री दर्शन महोदय एवं अकादमी के पदाधिकारिओं का इस संगोष्ठी के लिए प्रेरित करना तथा संगोष्ठी के लिए अनुमति देना दक्षिण गुजरात के सभी छात्रों एवं प्राध्यापकों की ज्ञानराशि में अवश्य वृद्धिदायक होगा।

अस्तु।

संस्कृत साहित्य अकादमी, गांधीनगर

एवं

विमल उच्चतर केळवणी ट्रस्ट संचालित

वीर नर्मद दक्षिण गुजरात युनिवर्सिटी संलग्न

श्री एम. आर. देसाई. आर्ट्स और

इ.इ.एल. कोसाडिया कॉमर्स कॉलेज, चीखली

(Accredited 'B' by NAAC)

के संयुक्त तत्त्वावधानमें आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

"संस्कृत साहित्य में युगबोध"

१३ मार्च २०१६ शनिवार

शोधपत्र - सार संचय

Seek The Infinite

यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति भूमैव सुखं भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्य ।

That which indeed is the Infinite, that is joy. There is no joy in the finite. The Infinite alone is joy. But the infinite indeed has to be sought after.

- Chandogya Upanishad

Why weepest thou, brother ? There is neither death nor disease for thee. Why weepest thou, brother ? There is neither misery nor misfortune for thee. Why weepest thou, brother? Neither change nor death was predicated ofthee. Thou art Existence Absolute..... Be your own self.

- Swami Vivekananda, cw, 5:275

राष्ट्रीय संगोष्ठी

"संस्कृत साहित्य में युगबोध"

१९ मार्च २०१६ शनिवार

पथदर्शक

श्री दर्शन ए. देसाई

प्रमुखश्री, विमल उच्चतर केळवणी ट्रस्ट

अध्यक्ष

डॉ. फाल्गुनी एच. देसाई
आचार्या
आर्ट्स और कॉमर्स कॉलेज, वीरवली

श्री मनोज ओझा
महामात्र
गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर

संयोजक

पा. नयना के. नायक

सह संयोजक

पा. छीबुभाई डी. पटेल

श्री एम. आर. देसाई. आर्ट्स और इ.इ.एल. कोसाडिया कॉमर्स कॉलेज, वीरवली

राष्ट्रीय संगोष्ठी सलाहकार समिति

श्री दर्शन ए. देसाई (प्रमुखश्री, विमल उच्चतर केळवणी ट्रस्ट)
श्री मनोज ओझा (महामात्र, साहित्य अकादमी गांधीनगर)
श्री भाग्येश ज्हा (अध्यक्ष, संस्कृत साहित्य अकादमी गांधीनगर)
डॉ. फाल्गुनी एच. देसाई (आचार्या)
डॉ. हर्षदेव माधव (अहमदाबाद)
प्रा. नयना के. नायक (संयोजक)
प्रा. छीबुभाई डी. पटेल (सह संयोजक)
प्रा. चेतन डी. पटेल (व्यवस्थापक)
डॉ. जयमल एस. नायक (व्यवस्थापक)

स्थानिक व्यवस्थापन समिति

अध्यक्ष
डॉ. फाल्गुनी एच. देसाई
आचार्या

संयोजक
प्रा. नयना नायक
प्रा. सी. डी. पटेल

कोषाध्यक्ष
प्रा. सी. डी. पटेल
श्री पी. सी लाड

स्वागत समिति
प्रा. रमीला नायक
प्रा. दक्षा पटेल

आमंत्रण समिति
प्रा. छीबुभाई पटेल
प्रा. रमीला नायक
प्रा. मीनु देसाई
डॉ. जयमल नायक
श्री राजु गांधी
कुमारी ज्योति पटेल

नामांकन समिति
प्रा. मीनु देसाई
प्रा. अशोक पटेल
प्रा. धर्मिष्ठा आहीर
श्री तेजस मिस्त्री
श्री वीज़ लाड
श्री नगीन पटेल

निवासव्यवस्थापन समिति
प्रा. चेतन पटेल
प्रा प्रशात पटेल
श्री छोटुभाई पटेल
श्री राजु गांधी
श्री सुरेश पटेल

भोजन समिति
प्रा. वसंत देसाई
प्रा दिनेश राठोड
डॉ. मुकेश पटेल
प्रा. इन्दु पटेल
प्रा. मीनु देसाई
श्रीमती मिनाक्षी नायक

सांस्कृतिक समिति
प्रा. रमीला नायक
कु. विद्धि मेसुरिया
कु. धर्मिष्ठा पटेल

फोटो ग्राफी समिति
डॉ जयमल नायक
डॉ. रियाज़ लाई

उद्घाटन/ मंच शणगार समिति
डॉ. जयमल नायक
प्रा. चेतन पटेल
प्रा. सुमन कोंकणी
प्रा. प्रशात नायक
प्रा. तेजस मिस्त्री
प्रा. आरमीन सैयद

प्रमाणपत्र वितरण समिति
डो. योगेश देसाई
प्रा. दक्षा पटेल
डॉ जयमल नायक
प्रा. हेमांगिनी देसाई

उद्घोषक समिति
प्रा. नयना नायक

रिपोर्टींग समिति
प्रा. शंकर पटेल
डॉ. रियाज़ लाई

कार्यक्रम समय सारणी

१९ मार्च २०१६ शनिवार

पंजीकरण एवं उपाहार समयमां प्रातः ०८:०० से १०:००

उद्घाटन समारोह- प्रातः १०:०० से ११:००

स्थल मोहनकाका लाईब्ररी होल आर्ट्स और कॉमर्स कॉलेज, चीखली - गुजरात

प्रथम सत्र ११:०० से १:००

सत्राध्यक्ष डॉ. फाल्गुनी एच. देसाई
सत्र संचालक प्रा. सी. डी पटेल
सारस्वत विद्वान डॉ. हर्षदेव माधव
विषय विशेषज्ञ डॉ. सुदेश आहूजा
विषय विशेषज्ञ डॉ. प्रज्ञा जोशी

द्वितीय सत्र मध्याह्न २:०० से ४:००

सत्राध्यक्ष डॉ. नीना भावनगरी
सत्र संचालक प्रा. नयना नायक
विषय विशेषज्ञ डॉ. श्वीन्द्र खाण्डवाला
विषय विशेषज्ञ डॉ. निरंजन पटेल
विषय विशेषज्ञ डॉ. योगिनी व्यास

भोजनावकाश १:०० से २:००

तृतीय सत्र - (अ) ४:०० से ५:००

अध्यक्ष डॉ. मयूरी अद्रोजा
संचालक डॉ. ईदिरा पटेल
प्रपत्र पठन क्रमांक ३ से १३
स्थलः- मोहनकाका लाईब्ररी होल

तृतीय सत्र - (ब) ४:०० से ५:००

अध्यक्ष डॉ. शोभना सोलंकी
संचालक डॉ. भावना चांपानेरी
प्रपत्र पठन क्रमांक १४ से २४
स्थलः- डीजीटल कॉन्फरन्स कक्ष

तृतीय सत्र - (क) ४:०० से ५:००

अध्यक्ष डॉ. सुरवीरसिंह ठाकोर
संचालक डॉ. दीपक पटेल
प्रपत्र पठन क्रमांक २५ से ४०
स्थलः- सेमीनार होल

समापन सत्र

अध्यक्ष डॉ. प्रज्ञा जोशी
सभाध्यक्ष श्री अरविंदभाई देसाई
संचालक प्रा. दक्षा पटेल
प्रमाण पत्र वितरण

प्रमुख स्थान से.....

श्री दर्शन ए. देसाई
प्रमुख
विमल उच्चतर केळवणी ट्रस्ट, चीखली

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयो: ।
बन्धाय विषयासक्तं मुक्तं निर्विषयं स्मृतम् ॥

It is indeedthe mind that is the cause of men's bondage and liberation. The mind that is attached to sense - objects leads to bondage, while dissociated from sense - objects it tends to lead to liberation. So they think.

-AMRITABINDU UPANISHAD

नमस्कार ! शब्दसे संस्कारका जन्म हुआ । उस अनाहत नाद का साकार स्वरुप साहित्य कृतिओंमें हैं । इस ज्ञान राशिके प्रज्वलित यज्ञ में उपस्थित हरेक उपासक का हृदयसे अभिवादन । सांस्कृतिक विरासत, राष्ट्र के प्रति सजगता एवं विश्वको सत्यं शिवं सुन्दरम् की धरोहर देनेवाली संस्कृत भाषा की राष्ट्रीय संगोष्ठिमें संस्कृत साहित्य अकादमी, गांधीनगर के सहयोग से हम कृतार्थ हुए हैं ।

आप ज्ञान राशि से तेजस्वी बने । आपको उज्ज्वल भविष्यके लिए शुभकामनाये ।

अध्यक्षीय......

तेजस्विनावधीतमस्तु
- तैत्तीरिय उपनिषद्

Falguni H. Desai
Principal
M.R.D. Arts & EELK Commerce College, Chikhli

हमारा अध्ययन तेजस्वी हो ।

Let Our efforts at learning be luminious.

समुज्ज्वल ज्ञानयुवाको तेजस्वी कहा गया है । अत: करण समुज्ज्वल हो तभी व्यक्तिके मन - वचन और कर्मकी गति तेजस्वी होती हैं । जो तेजस्वी होते हैं, वे मंदचेतस कभी नहीं होते । हम अश्वकी गतिको तेज गति कहते हैं । अध्ययनशील को तेजस्वी कहा गया है..... तमसो मा ज्योतर्गम्य ..... हमारी प्रार्थना भी यही होती हैं .....

"From darkness, lead us unto light..." अंधकारमें से परम तेज तक, प्रभु हमें ले जाइए । हम में और हमारे जागतिक सदर्भों में गहरा अंधेरा है । हम चैतन्य के संचारसे निज चैतन्य होते रहते हैं । हृदयमें हमेंशा दीप प्रज्वलित रहे । ज्ञानदीप धृति सेतुरक्षति हो । स्मृति में यह प्रगट हो तो यही संप्रज्ञ मनुष्यका तेजसत्व है ।

तेज. शब्दके उच्चारण मात्र से ही व्यक्ति की भीतरी चेतना झंकृत होती है । गुजरात संस्कृत साहित्य अकादमी, गांधीनगर एवम् विमल उच्चतर ट्रस्ट संचालित श्री एम. आर. देसाई आर्ट्स और इ.इ.एल. कोसाडिया कॉमर्स कॉलेज, चीखली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी संस्कृत साहित्यमें युगबोध के इस शोधपत्र संचय को आपके करकमलों में भावपूर्ण हृदयसे रखते हुए हम अतीव प्रसन्न है । संस्कृत विभाग और संगोष्ठी की तैयारीओमे लगे हुए हमारे महाविद्यालय के परिवार को अभिनंदन । विमल उच्चतर केळवणी ट्रस्ट और गुजरात साहित्य अकादमी केपथ प्रदर्शन एवं सहयोगसे ही यह संगोष्ठि संभवित हुई है । परमात्मा हमारे हर कार्यमें हमारे साथ है, इसी विचारने हमारे संकल्पको दृढ बनाया है ।

स्व. मोहनकाका जो हमारी संस्थाके आद्यस्थापक हैं, उनको वंदन करते हुए , इस ज्ञानयज्ञ में आहुति देनेवाले सभी भाग्यशाली सहभागीओंको अभिनंदन ।

संहगोष्ठी विषयक

प्रा. नयना नायक
एम. आर. डी. आर्ट्स और
इ.इ.ऐल. के. कोमर्स कॉलेज, चीखली

भारतस्यैकतायाः अखन्डतायाश्च स्त्रोतः संस्कृतभाषा भगवदभाषा सर्वेषा ग्रन्थानांचशास्त्राणां च भाषा वर्तते। संस्कृत वाङ्मये न केवलं जाति विशेषस्य, देशविशेषस्य वा कृते सन्देशः सन्ति, अपितु सर्वेषां तपसः साधनायाः च महात्मयं प्रति पादितम् । कालानुसारं काव्य प्रतिमानानी परिवर्तनति । युगस्य आवश्यक्तानुसारं काव्यं सृज्यते । यस्मिन काले कविः जीवति तत्कालविशिष्टस्य द्रष्टा व्याख्याता च स भवति । वर्तमान काले भौतिक्ता, स्वार्थपरायणता , हिंसा, धनलोलुप्ता, ईर्षा - द्वेष - प्रभृतीनांअतीव दृश्यते । तथापि भारतीय समाजस्य आधारशिलारुप शाश्वताणि सिद्धांतानि, अहिंसा, सहयोगः, सहिष्णुता, शान्तिपूर्णसहास्तित्वं, विश्ववंधुत्वं, सदाचारं एतानि अनेकानि मानव समाजस्य आचारसंहितारुपविचार मौत्तिकाणी संस्कृत वाङ्मये दृश्यते । साहित्यस्य अध्ययनमात्रेज अघतनातां विविध सामाजिक, कौटुम्बिक, आर्थिक, राजनैतिक, आदि अनेकानि समस्यानो परिहारः प्राप्यते । एवं वि श्वशान्त्यै संस्कृत वाङ्मय का योगदानं वर्तते ।

एतद् ज्ञानयज्ञस्य साफलयार्थंउपस्थितंमहानुभावानां, विद्वतजनानां ऋजं स्वीकरोमि । भारतीय संस्कृतिदीपशिरवांसप्रकाशां रक्षितुं अकादम्यँ - अध्यक्ष महोदयः भाग्यश्महोदय अकादम्या अध्यक्षः श्री मनोजमहदियः तथा च पथ प्रदर्शकः श्री दर्शनमहोदयस्य धन्यवादं प्रकटी करोमि । ज्ञानयज्ञस्य सहाभगिनी आचार्या महोदया फाल्गुनी महोदया अपि मम कार्यस्य प्रेरणपूर्तिः अस्ति । मम सहकर्मयोगी सी.डी. पटेल महोदयः, समग्र महाविद्यालय परिवारः तथा च उपस्थित महानुभावाम् विना एतद् कार्यसाफल्यं अशक्यं वर्तति । मया महद् गौरवा स्यंदमिदं यत भवतः आगमनैः अस्माकं यज्ञं प्रपलं संजात ।

१	-डॉ. नरेश भट्ट - अतिथिविशेष	श्रृण्वन्तु अमृतस्य पुत्राः
२	-डॉ हर्षदेव माधव सारस्वतविशेष	आधुनिक संस्कृत कविता में युगबोध
३	-डॉ. फाल्गुनी देसाई	Practical Vedanta: The Divinization of Life
४	-डॉ सुदेश आहूजा विषयविशेषज्ञ	आधुनिक संस्कृत साहित्य में युगबोध
५	-डॉ प्रज्ञा जोशी विषयविशेषज्ञ	युगबोध वैदिक वाङ्मय के परिप्रेक्ष्य में
६	-डॉ रवीन्द्र खाण्डवाला विषयविशेषज्ञ	श्रीमद् भगवद् गीता में आधुनिक युगबोध
७	-डॉ निरंजन पटेल विषयविशेषज्ञ	महाभारत में युगबोध
८	-डॉ योगिनी व्यास विषयविशेषज्ञ	भारतीय साहित्यकी कालजयी कृति रामायण
९	- प्रा. नयना नायक	सप्तर्षिमण्डलम् का युगबोधात्मक चिंतन
१०	- डॉ. भावना चांपानेरी	उपनिषदमे प्रेय और श्रेय
११	- डॉ. मयूरी अद्रोजा	भाष्यकार पतंजलि के काल का युगबोध

१२	- प्रा. संध्या शेलत	शुनः शेपाख्यान में प्रतिविंबित सांप्रत समाज
१३	- प्रा. सी. डी. पटेल	उपनिषदोमें युगबोध
१४	- डां. शोभना सोलंकी	कालिदास के मेघदूतम् में नैतिकता एवं उपदेशपर विचारकणिका
१५	- डां. सुरवीरसिंह ठाकोर	शंकराचार्य का युग प्रवर्तक बोध
१६	- डां. अशोक पटेल	श्रीमद् भगवद् गीता और उपनिषद में युगबोध
१७	- डां. दीपक पटेल	संस्कृत नाटकोमें निरूपित संघर्ष तत्त्व
१८	- प्रा. रेखा पटेल	कविकुलगुरूकालिदास की नाट्यकृतिओं में जीवनदर्शन
१९	- प्रा. जयदेवी जोशी	रामायण में वर्णित आदर्श राजनीति
२०	- प्रा. नयना आमोदवाला	महाभारत में वर्णित राजनीति
२१	- प्रा. जिज्ञासा चावडा	प्रवर्तमान समयमां श्रीमद् भगवद्गीतानो युगबोध

२२	- प्रा. शिवराम गांवित	वेदमें प्राप्त मानव बोध
२३	- प्रा. दक्षा पटेल	श्रीमद्भगवद् गीता में युगबोध
२४	- प्रा. रमीला नायक	अभिज्ञानशाकुन्तल की शकुन्तला- भारतीय नारी समाजका प्रतिबिम्ब
२५	- प्रा. मीनाक्षी पानवाला	गीतामें वर्णित युद्ध-हिंसक या अहिंसक
२६	- डां. जयमल नायक	Yoga For Personalty Development
२७	- प्रा. मीनु देसाई	The Relationship Between Man & Nature In Atharveda
२८	- प्रा. इन्दुबेन पटेल एवं - प्रा. चेतन पटेल	गुप्तकालीन सुवर्ण युग और कालिदास रचित साहित्य कृतियां
२९	- प्रा. वंदना प्रमाणिक	संस्कृत सूक्तिओं में समाजदर्शन
३०	रवि पटेल	रघुवंशितम् महाकाव्यमें समाज दर्शनः शिक्षाके संदर्भ में
३१	- हसमुख सोलंकी	शतपथब्राह्मण नो युगबोध
३२	- जैमिका राठोड	उत्तररामचरितं मां युगबोध
३३	- वैशाली डोडीया	कादम्बरी में अभिव्यक्त युगबोधः क्रीडाओं के संदर्भमें

૩૪	- ભૂમિ પટેલ	संस्कृत साहित्यमों युगबोधः उपनिषद् के परिप्रेक्ष्यमे
૩૫	- જગદીશ વસાવા	બૌધાયનધર્મસૂત્ર ના સમય નો યુગબોધ
૩૬	- ધર્મિષ્ઠા ઍ. પટેલ	મનુસ્મૃતિ મા યુગબોધ
૩૭	- વિભૂતિ પટેલ	શકુન્તલા વિદાય - યુગબોધાત્મક ચિંતન
૩૮	- પુનિત શેલુ	રામાયણે યુગબોધ
૩૯	- સ્નેહા પટેલ	રામાયણ માં આદર્શ કૌટુમ્બિક ભાવના
૪૦	-ધર્મિષ્ઠા ટી. પટેલ	માનવસમાજનુ શાશ્વત સત્યઃ ભર્તૃહરિની નજરે
૪૧	-રીતેશ પરમાર	મોહરાજપરાજયમ્ માં નિરૂપિત યુગબોધ
૪૨	-અર્ચના પટેલ	ભારદ્વાજઋષિનો યુગબોધ
૪૩	-નિશા વસાવા	યાજ્ઞવલ્ક્યસ્મૃતિમાં યુગબોધ

शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः

નરેશ ભટ્ટ
(તંત્રીશ્રી વેદસંદેશ)વલસાડ

વિશ્વભરની પ્રજા ઉત્તમને શોધેછે. ટોટલ અવેરનેસસંપૂર્ણ ચેતનાનો વિસ્ફોટ થયોછે. તેનો લાભ ઊગતી પેઢીને મળી રહ્યો છે. આ વિશ્વની નવી પેઢી જ્યાં અને જેની પાસે ઉત્તમ હશે ત્યાં અને તેની પાસેથી વિચારોને ગ્રહણ કરવાની જ છે. ખોટી અને અનુપકારક વિચારધારા નું ઝડપથી અવસાન થશે. કોણે વિચાર્યું હતું કે, પૂર્વ અને પશ્ચિમ જર્મની એક થશે આ સંવાદિતાની ધારા સંસ્કૃત સાહિત્યમાં અત્રતત્ર જોવા મળે છે. તેથી સંસ્કૃતનો પ્રભાવ આપ મેળે જ સર્વ સ્વીકાર્ય બનવા જઈ રહ્યો છે. વેદોના ઋષિઓએ વિશ્વમાનુષ શબ્દ હજારો વર્ષ પહેલાં વિશ્વ ચોક માં ઉચ્ચાર્યો છે જ્યારે યુનો જેવી સંસ્થાની કલ્પના પણ માણસજાતને હતી નહીં ઋગ્વેદમાં(૧૦.૧૩.૧) **शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः** નોઉલ્લેખ કરી મનુષ્ય માત્રને અમૃતના પુત્રો ગણાવ્યા. આવતી પેઢી માટે આ જેવો તેવો સંદેશો ન રહેશે.

અમેરિકાએ સ્વાસ્થય રક્ષા માટેઅલ્ટનેટિવ મેડિસીન નો સ્વીકાર કર્યો એ યોગ પ્રતિ અમેરિકનોનું ધ્યાન ગયું હવે તો યુનોથકી સમગ્ર વિશ્વ પણ યોગનો સ્વીકાર કર્યો છે. આ યોગ દર્શન સંસ્કૃત ભાષામાં છે. જે સ્થિતિ યોગની થઈ તે આવતીકાલે આયુર્વેદની થવાની જ છે. યુરોપ અને અમેરિકામાં આર્યવેદિક કોન્ફરન્સો થવા લાગી છે. મૂળ તો અથર્વવેદ થી આખું આર્યુર્વેદશાસ્ત્ર પ્રગટ્યું છે જે હવે પછીના વર્ષોમાં માનવતા માટે સ્વાસ્થ્યનું કિરણ બનીરહેશે.જ્યાંસુધી સાઈકોલોનિકલ રિવોલ્યુશન એટલે મન ને પરિવર્તિત કરવાનું થશે નહીં ત્યાંસુધી માણસને શાંતિ મળવાની નથી. આ સંદેશો સંસ્કૃત સાહિત્ય આપે છે. સંસ્કૃત સાહિત્યનો કેટલો મોટો યુગબોધ આ છે.

आधुनिक संस्कृत कविता में युगबोध

डॉ.हर्षदेव माधव / संस्कृत विभागाध्यक्ष
श्री एच. के. आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद

युगबोध आधुनिक परिभाषा है। वैसे तो काव्य के प्रयोजनों में "व्यवहारविदे" तथा "कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे च" इसी प्रकार प्राचीन रचनाओं में भी युगबोध आवश्यक माना गया हैं। वागीश्वरीकण्ठसूत्रानुसार कवि चार प्रकार के होते हैं। उसमें मैत्रीप्रधान कवि के कर्म में युगबोध उपदेश रुपमें अभिव्यक्त होता हैं। उपेक्षाप्रधान कवि के काव्य में हास्य, व्यंग्य, कटाक्ष तथा ध्वनिरुप में युगबोध प्रतीत होता हैं। मुदिता प्रधान और करुणा प्रधान कविओं में युगबोध एकांगी हो सकता है, या निराशावादी हो सकता है। कोई भी कवि अपने युग से परे, निर्लेप रहकर सर्जन नही कर सकता। कदाचित ऐसा सर्जन हो भी जाये तो, उसमें अपने युग का प्रतिबिम्ब न होने के कारण वे रचनाएँ अप्रासंगिक बन जाएगी।

आधुनिक विश्व ईन्टरनेट, मोबाईल, सोशीयल मीडिया तथा पाश्चात्य सभ्यतासे लिप्त होकर अतीव संकुल बन गया हैं। वैश्विक संकीर्णता, देश की घटनाएँ, विश्वभाषा की असर तथा राजकीय प्रवाह, आदि के कारण कविका भावविश्व भी संकुल हो गया है। उसकी रचनाएँ विभिन्न प्रकार के तनाव से आकारित होती है। अत: आधुनिक संस्कृत कविता का भावबोध भी ऐसा ही रसप्रद एवं संकीर्ण हैं।

Practical Vedanta : The Divinization of Life

Dr. Falguni H. Desai
M.R.D. Arts & EELK Commerce College,
Chikhli, Gujarat, India.
E-mail : fpdesai2012@gmail.com

"असतो मा सद्गमय । तमसो मा जयोतिर्गमय । मृत्योर्माऽमृतं गमय ॥"

Vedant is a living philosophy and a divine source of inspiration. It is a universal phenomenon, a world literature and an eternal religion. The inclusiveness and scientific approach makes it a living philosophy. The paper elobrates the following pathways concluding on the hole that quest of life is the ultimate journey within -

(I) Universality and humanism are two essentials of Vedanta tradition.

(ii) Exploring the uncommon direction of vedanta where practical system is meant for common people.

(iii) It Reveals timeless wisdom of 'Bharatiya sanskriti' and 'Sabhyata', 'culture' and 'civilization'.

(iv) In Vedanta 'Philosophy and religion' 'philosophy and practical life' and 'Religion and Practical Life' builds a contact zone. The study leads to the conclusion that divinization of life

means the greatest love, the highest use fulness, the most open communication, the noblest suffering, the severest truth, the heartiest counsel, and the greatest union of minds brave men and women are capable of Divinization asks for total freedom Mankind has evolved from stone to space and supersonic age inspite of his advancement something is still lacking. This quest humanity's longing to discover the divine within. Along with external progress, inner-being too must enhance. Unfoldment of divine is one of the vital human craving, the inner - being needs attention. The Journey within is a path towards the divinization of life.

Key words : Vedanta, Culture, Civilization, Divinization.

अर्वाचीन संस्कृत वाङ्मय में युगबोध

डॉ. श्रीमती सुदेश आहूजा
संस्कृत विभाग, राजकीय महाविद्यालय कोटा - राजस्थान.

साहित्य समाज का दर्पण होता है। कोई भी जीवन्त साहित्य युग के दबाव की उपेक्षा नहीं कर सकता। अर्वाचीन संस्कृत साहित्य आज राजसी वैभव के पटल से उतर कर जन सामान्य की भावनाओं को अंगीकृत कर चुका है। आज देश में चारों ओर आतंकवाद, शोषण, दरिद्रता, बेरोजगारी और नैतिक अवमूल्यन जैसी समस्याएँ खडी हो तो संवेदनशील कवि मन उससे अछूता केसे रह सकता है ? प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी का मन्तव्य अक्षरश : सत्य है कि यदि कविता हने समय की सच्चाईयों को समजने की दष्टि न देकर वाग्जाल, वितण्डा और छलावें का प्रपंच रचती हे, तो कवितेव वर कु कवितायाः।

अर्वाचीन संस्कृत वाङ्मय देशकाल की क्षुद्र सीमाओं को छोडकर वैश्विक चेतना का स्पर्श करता प्रतीत होता है। कार्गिलशतकम् - गोधराघटनम् , भूकम्पभैरवम्, कश्मीरक्रन्दम् तथा आतंकवाद पर अनेकों कवितामें लिखी गयी सामाजिक समस्याओं के अन्तर्गत दहेज, हत्या, नारीशोषण, विधवाविवाह, कन्याभ्रुण हत्या, आदि अनेक समस्याओं को संस्कृत कवियों ने अपनी लेखनी का विषय वनाया है। दरिद्रता, बेरोजगारी, अशिक्षा, भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता और सांस्कृतिक अवमूल्यन के अनेकों चित्र हैं अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में।

पर्यावरण - प्रदूषण, आतंकवाद और वर्तमान राजनीति और स्वार्थपरता को उजागर ही नहीं किया गया वरन शोषण व अत्याचार के विरुद्ध सचेत भी किया है,अत्याचार का विरोध व लोकाराधन साहित्य का उदेश्य भी हैं। इस प्रकार वर्तमान संस्कृत साहित्य में वर्तमान की विडम्वनाओं, विसंगतियों और संपूर्ण युग की धडकन का व्यौरा है।

युगबोध - वैदिक वाङ्मय के परिप्रेक्ष्य में

प्रा. प्रज्ञा जोगेश जोशी
कार्यकारी निदेशक,
महर्षि वेद विज्ञान अकादमी, अमदावाद, गुजरात

वेद मानवसभ्यता का अति प्राचीनतम ग्रन्थ है। यह प्राचीन एवं पवित्र महर्षियों के अन्तरतम् हृदय की गहराई से केवल ईश्वरकृपा से बहा हुआ शब्दस्रोत है। उसमें मानव, समाज एवं राष्ट्र के कल्याणकारी बोधसूत्र संगृहीत है। उसमें सर्व वर्णों के प्रति अभेद भावना प्रकट हुई है।

मानव देह पाँच तत्त्वों (पृथ्वी जल, तेज, वायु, आकाश) से बना हुआ हैं। मनुष्य का नियमानुकुल आचरण करते हुए इन तत्वों को विशुध्य एवं आग्यावस्था में रखना हैं। उसमें विकार न आने पाये, उसका ध्यान रखना है, इस प्रकार आंतरिक पाँच तत्वों पर नियं त्रण होगा, अनुशासन होगा तो बाह्य जगत के स्थूल पाँच तत्वों पर भी नियंत्रण रहेगा। इस प्रकार स्वयं की रक्षा करते हुए प्रकृत्ति के तत्वों को सुरक्षित रखना, यही तो युगबोध हैं।

वेद में प्राणी मात्र के लिए शाश्वत मूल्य बिखरे हुए है, विशेषत: मनुष्य के लिए शान्ति, सद्भाव, सौहार्द, विश्वबन्धुत्व, स्वावलंबन, सह अस्तित्व, समानता, मधुरवाणी, दान - उदारता, धर्म के दस लक्षण, संगठन, यम - नियम जैसे तत्वों की युगबोध के अनुसंधान में चर्चा करने का उपक्रम है। वास्तव में ऐसा कहना अप्रमाणिक होगा कि वेद में उपरोक्त कुछ तत्त्व युगबोध के लिए हैं, अपितु वेद के प्रत्येक मन्त्र में युग युगान्तर के लिए बोध प्रदान करने की क्षमता है। वेदोपदेश में सहज रुप से गुम्फित विज्ञान के तत्त्व भी निर्दोष है। मानव कल्याण के लिए कहे गये हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि सहस्त्र वर्षों पूर्व हमारे महर्षियों ने जो चिन्तन किया था वही युगबोध है। कुछ तत्त्व चिरंतन है। इन्हीं बातों को उजागर करने का उपक्रम है।

श्रीमद् भगवद्गीता में युग बोध

रवीन्द्रकुमार खांडवाला
श्री एच. के. आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद

श्रीमद् भगवद्गीता किसी एक युग का सृजन हो, तो भी वह एक शाश्वत कृति है। भगवद्गीता का युग बोध न तो प्राचीन है, न तो अर्वाचीन है, वह तो सर्वकालीन है इसीलिये प्रत्येक युग के संदर्भ भगवद्गीता में से यथायार्थ के रुपमें लिए जा सकते हैं। वर्तमान विश्व अनेक समस्या एवम् घटनाओं से गुजर रहा है। आधुनिकता की आकाशी उडान के बीच मनुष्यजीवन की गति अदृश्य हो गई है। ऐसा लगता है मानों मृत्यु की ओर निरंतर गति हो रही हो। इस संदर्भ में गीता अनेक प्रश्नों के उत्तर देती हैं।

सामाजिक एवम् आर्थिक समस्याएँ , जाति भेद, वर्णभेद, पर्यावरण, विश्वयुध्य के बचे हुए नगाडे नीत नये पनप रहे विविधरोग, सबंध विच्छेद के सामाजिक मूल्य वर्गविग्रह और वर्गभेद, निराशा और हताशा की ओर अग्रसर करती हुई विदेशी सभ्यता और मानसिक संतुलन की प्राप्ति के लिए किए जा रहे आध्यात्मिक प्रयत्न मनुष्य के अस्तित्व और खोये हुए अस्तित्व की चिंताएँ वैभव पूर्ण जीवन के बीच 'स्व' को सही रूप में पहचानने की कोशिश और मनुष्य का आध्यात्मिक अस्तित्व इन सभी प्रश्नों के उत्तर भगवद् गीता का युगबोध है।

निरंजन पी. पटेल
अध्यक्ष, अनुस्नातक विभाग
सरदार पटेल युनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर

महाभारतमें युगबोध

वैश्वीकरण के इस युग में जब हरेक पदार्थों का मूल्य अंकित किया जा रहा है। ऐसे समय में और ऐसी चित्तभ्रांति के समय में मानवप्राणी अपने कर्मों द्वारा विकट प्रश्नों में शांति प्राप्ति हेतु प्रयत्न करता है। परंतु आधा अधूरा उसका यत्न होने के कारण पूर्णत: सफल नहीं हो पाता। ऐसे कठिन कालमें हम ऐसा क्या दे सकते है जिसे पूरे जनसमुदाय को अंशत: शांति की अनुभूति हो सके। वह अपने पूर्व ऋषि द्वारा सूचित मार्ग पर यदि चलते हैं तो लक्ष्य प्राप्ति भी होगी तथा शांतिभी मिलेगी। शांति किस प्रकार प्राप्त होगी ? तो इसका प्रत्युत्तर है "यन्न भारते तन्न भारते"। संस्कृतिओं की गतिविधियाँ जहाँ प्रतिबिंबित होती है जिसमें जीवन की अभिव्यक्तिका दर्शन प्राप्त होता है वह है भारतीय संस्कृति का विश्वकोश महाभारत उसकी हमें शरण लेनी होगी। [illegible] सिर्फ दो अक्षरों से बना धर्म शब्द समजना भी कठिन है। जिसे गूढार्थ रूप में महाभारतकार ने प्रयुक्त किया है। जितना पुण्य को जानना आवश्यक है उतना ही पापको भी जानना जरूरी है। वर्तमानकाल में व्याप्त धर्मग्लानि [illegible] इन सब [illegible] है। हर कोई समाजमें शांति स्थापना चाहता है। समाजका जीवन उर्ध्वगामी हो, स्वस्थ समाज रचना हो वह सब [illegible] सकता है। कृष्ण कहते है - धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे। इस परिसंवादका हेतु धर्म के हेतु में ईंट रखने जैसा है। यदि हम अपने धर्मका रक्षण करेंगे तो धर्म हमारा रक्षण करेगा धर्मो रक्षति रक्षित: ॥

[illegible]
अध्यक्ष संस्कृत विभाग
उमा आर्ट्स कॉलेज, गांधीनगर

भारतीय साहित्यकी कालजयी कृति - रामायण

भारतीय जनजीवन में ही नहीं, बल्कि विश्व - संस्कृति में भी वाल्मीकि कृत "रामायण" का विशिष्ट स्थान है। भारत की सांस्कृतिक चेतना, साहित्यिक प्रेरणा और सामाजिक भावना को मूल आधार प्रदान करने वाला यह अमर काव्य आदिकवि वाल्मीकि की चिरस्मरणीय देन है। सत्य, धर्म, भक्ति और मुक्ति, भोग और त्याग, अनुराग और विराग इन सबका समन्वय करनेवाली प्रशस्त रचना रामायण वास्तवमें भारतीयता का अक्षय कोष है। वाल्मीकि का यह महाकाव्य पृथ्वीतल को विदीर्ण कर उगनेवाले उस विराट वट वृक्ष के समान है। जो अपनी शीतल छाया में भारत के समस्त मानवों को आश्रय देता हुआ प्रकृति की विशिष्ट विभूती के समान अपना मस्तक उपर उठायें हुए खडा है।

सप्तर्षिमण्डलम् का युगबोधात्मक चिंतन

प्रा. नयना के. ...
श्री एम . आर. डी. आर्ट्स ...
ई .ई. एल. के. कोमर्स कॉलेज, ...

समस्त भारतकी विभिन्न सांप्रदायिक एवं सांस्कृतिक विचारधाराओंका महास्त्रोत संस्कृत की पुरातन साहित्य परंपरा से अस्खलित बहता हुआ आज भी प्रवाहित है। हर्षदेव माधव अपने आधुनिक काव्यशास्त्रीय ग्रंथ वागीश्वरी कण्ठ सूत्र में कहते है कि युग प्रभाव: काव्य चैतन्य स्पन्द: । २. १. ।। प्रतियुगं काव्यप्रवाहं परिवर्तनान्या गच्छन्त्येव । परस्पराश्रित साहित्य एवं समाज तथा उसका अभिन्न अंग रुप साहित्यकार या कोई भी कलाकार अपने युगीन समाजके हरेक व्यवहार , रीति रिवाज, उन्नति, पतन अर्थात् हरेक कोने से परिचित होता है। और समाजका पथदर्शक बनकर वह अपने युगका प्रतिनिधि बनकर अपनी कृति के पात्र, कथा, चरित्र, आदिके द्वारा अपनी संवेदना अनुभूति केमुखरित करता है। साहित्य कलातत्वसे भरपूर इतिहास होता है। जिसका अंतिम उद्देश्य आनंद के साथ समाजको राह दिखाना, व्यवहारज्ञान, कान्ता सम्मित उपदेश देकर अपनी जिम्मेदारी निभाना है।

आधुनिक कालकी उत्कट भावनाओंके साथ प्राचीन कथा को जोडकर जनकशंकर दवेजीने मेनका - विश्वामित्रकी प्रणयगाथा में छिपी भारतीयता, सांस्कृतिक, सामाजिक चेतना के शाश्वत अंशोको उजागर किया है। विश्वामित्रको रिझाकर अपने प्रणयपाशमें बाँधनेके लिए उत्सुक नारी की मर्यादा, परिश्रम - तप बिना किसीको भी सिध्दि नहीं मिलती तथा साधन शुध्दि केसाथ मानवमात्र मे कार्यान्वित , सच्चे मानवीय गुणोंका होना भी इतना ही आवश्यक है। तब शकुन्तला भरत की माताकी प्राप्ति होती है।

उपनिषद् में प्रेय और श्रेय

प्रा. भावना जे. वाघानेरी
एस. टी. बी. आर्टस कॉलेज, सुरत

प्रेय और श्रेय दो पृथक पृथक मार्ग हैं। ये दोनो विभिन्न फल देनेवाले साधन मनुष्य को बंधनमें डालते हैं। प्रेय लोकोन्नतिका मार्ग हैं और श्रेय परलोकोन्नतिका मार्ग हैं। उपनिषद् में ये दोनों मार्ग का गहनता से सरल श्रुतिवाक्य के माध्यम से ऋषि ने उपदेश किया हैं।

कठोपनिषद् १.२.१ में कहा कि प्रयोजन भिन्न होते ए भी श्रेय और प्रेय पदार्थ मानव को अपने बन्धन में बाँधते हैं, अर्थात् अपनी और आकृष्ट करते हैं। इतना होने पर भी श्रेय (कल्याण मार्ग) अपनाने वालों का कल्याण होता है और दूसरी और प्रेय - सांसारिक भोगवाली प्रवृत्ति - पथ के पथिक को बारम्बार ८४ लाख योनियाँ में भटकना पडता हैं। सौभाग्य से नचिकेता ने श्रेय मार्ग को अपनाकर सांसारिक विविध प्रलोभन दिखाने वाले यम को चकित एवं प्रभावित किया है। नचिकेता की प्रशंसा करते हुए स्वयं यम ने (कठो १.२.४.) कहा है कि मैं तुम्हें विद्याभिलाषी मानता हूँ।

प्रेय और श्रेय दोनों मार्ग एक दूसरे से विपरीत, विरुद्धार्थसूचक और दूर है। ये अविद्या और विद्या इस नाम से जाने गये हैं ईशोपनिषद् के ११ वें मन्त्रमें कहा हैं -

विद्या चा विद्या च यस्तद्वेदोभय सह । अविद्या मृत्युं तीर्त्वा विद्यामृतमश्नुते ।। प्रत्येक कल्याणपथ के पथिक का उद्देश्य श्रेय होना चाहिये, और प्रेय का इस प्रकार उपयोग करना चाहिये कि वह श्रेय का साधन बन जाय।

भाष्यकार पतंजलि के काल का युगबोध

प्रा. मयुरी अग्रोजा
श्री रंगनवचेतन महिला आर्ट्स कॉलेज,
वालिया - भरुच, गुजरात

काल के गर्भ में निहित मानवीय जिवन के उच्चत्तन मूल्यों की खोज तत्कालीन साहित्यके समंदरमे रत्नगर्भ स्वरुपे में छूपी रहती हैं। भाष्यकार पतंजलि के समय में चारों संहिताए, पुराण, इतिहास, ब्राह्मण और सूत्र ग्रंथोका परिणमन हो चुका था। रामायण - महाभारत एवं आख्यान ग्रंथोका भी प्रणयन हो चूका था। अतः संस्कृत के शब्दकोषने भी विशाल कद को धारण कर लिया था उस समय अपभ्रंश शब्दों को साहित्य में सम्मिलित करने के कारण स्वरुप, उन्हें जनसामान्य की मान्यता प्राप्त हो चुकी थी। फलतः संस्कृतके भ्रंश का भय उद्भवित हुआ। ऐसी स्थिति में पतंजलिने भाषाका परिमार्जन करना आवश्यक समजा उन्होंने आर्यावत में रहनेवाले ब्राह्मणों के लिए षड्ङो सहित वेदों के अध्ययन को आवश्यक समजा। उसमे भी व्याकरण अनिवार्य बनाया। वेदरक्षा व्याकरण के ज्ञान के बिना संभव नहीं हैं अतः समर्थ भाष्यकार पतंजलिने व्याकरण एवं भाषा के माध्यम से वेदरक्षा का युगबोध कार्य संपन किया। प्रस्तुत संशोधन पत्र में इस युग कार्य की ओर अगूलिनिर्देश किया गया है।

शुनःशेपाख्यान में प्रतिबिंबित सांप्रत समाज

प्रा. श्रीमती संध्याबेन शेलत
जे.पी. श्रोफ आर्ट्स कॉलेज, वलसाड

भारतीय संस्कृति के इतिहास में वेदों का स्थान गौरवपूर्ण हैं। सनातन धर्म के स्त्रोत का उद्‌भव स्थान वेद हैं। वेद और वेदों से सम्बन्धित समस्त साहित्यमें अभिव्यक्त समाजदर्शन आज के युग में मनुष्य के चारित्र्यगठनके लिये, चारित्र्य के आदर्शबोध के लिये और सत्य - नीति के मार्ग पर चलनेका प्रयत्न करनेवाला मनुष्यके लिए प्रेरणादायी हैं।

वेदों में ऋग्वेद सब से प्राचीन हैं। ऋग्वेद के साथ दो ब्राह्मण ग्रंथ जुडे हुए हैं। उनमें से ऐतरेय ब्राह्मण अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इन ब्राह्मण ग्रंथोको सरल, रोचक और आकर्षक बनानेका श्रेय कुछ आख्यानों को मिलता हैं।

ऐतरेय बाह्मण सबसे दीर्घ और आकर्षक आख्यान 'शुनः शेपाख्यान' हैं। डॉ. हरियप्पाके मत से 'शुनः' अर्थात् 'सुख' का और 'शेप' अर्थात् 'खंभा'। 'Piller of hapiness' ऐसा अर्थ होता है। यह अर्थ मनुष्य के कल्याण की ओर अंगुलिनिर्देश करता है।

इस आख्यान के कथानक में इक्ष्वाकुवंश में जन्मे हुए राजा हरिश्चन्द्र अपुत्र थे। नारद नामका ऋषि कुमार उन्हें पुत्र प्राप्ति के लाभ दिखाते हैं। उसमें उस कालमें पुत्र के लिये समाजमें जो भावना प्रचलित थी उसका सुन्दर प्रतिबिंब पडता हैं। पुत्र अर्थात आत्मा हि जया आत्मनः। आत्मा से जन्मी हुई आत्मा, दीप से उद्भवित दीप ही देख लो। पुत्र अर्थात परम व्योम में ज्योति।

उपनिषदों में युगबोध

प्रा. सी. डी. पटेल
श्री एन. आर.देसाई आर्ट्स और इ.इ. एल. के. कोमर्स कॉलेज, चीखली

उपनिषद ज्ञानका विश्वविद्यालय हैं। सत्य, निष्ठा, ज्ञानऔर आदर्शवाद इसकी नींव हैं। प्रत्येक साहित्यमें अपने युग के विचार - नीति प्रतिबिंबित होते हैं। उपनिषदों का विचार केवल कोई एक व्यक्ति, एक वर्ग, एक प्रदेश, एक विषय, या एक युग मात्रका विचार नहीं हैं, बल्कि व्यक्तिसमूह, विश्वसमूदाय एवं सर्वकालिन एक आदर्श विचारधारा हैं। अपने सकारात्मक, रहस्यमय और उपदेशात्मक शैलीसे उपनिषदोंने विश्वको प्रभावित किया हैं। वेदमें बोये गये विचारबीज उपनिषदमें वृक्ष बनकर फैला है, जिसकी छायामें मानव सभ्यता,संस्कृति पली हैं।

भौतिक सुख समृध्दि ओंसे संपन होने के बावजूद भी आज मनुष्य भीतर से अपने आप में कुछ न कुछ कमी महसूस कर रहा हैं। सत्य और अनृतके बीच उलज जाता हैं। सत्य क्या हैं ? अनृत क्या हैं ? श्रेय क्या हैं ? प्रेय क्या हैं ? विद्या क्या हैं ? अविद्या क्या हैं ? ऐसे धेर सारें आध्यात्मिक, व्यवहारिक और चैत्तसिक प्रश्नों का उत्तर और समाधान ही उपनिषदोंका युगबोध हैं।

कालिदास के मेघसन्देश मे नैतिकता एवं उपदेशप्रद विचारकणिका

प्रा. श्रीमती शोभनाबेन अेन. सोलंकी
श्रीमती जे.पी.ऑफ आर्ट्स कोलेज, वलसाड.

सन्देश काव्यो में सन्देश की ही प्रधानता रहती हैं। प्राय : यह सन्देश किसी विरही प्रिय या प्रेयसी के द्वारा अपनी प्रेयसी या प्रिय के पास भेजा जाता हैं। कालिदास का मेघसन्देश प्रथम सन्देश काव्य है। कवि कुलगुरु की किसी भी अन्य रचना ने संस्कृत साहित्य को इतना प्रभावित नहीं किया जितना कि उनके मेघसन्देश ने और इस दष्टि से मेघसन्देश नितान्त विलक्षण है। इस काव्य के अनुकरण पर समग्र देश में परवर्ती कवियों द्वारा अनेक सन्देश काव्य लिखे जा चुके हे। मेघ सन्देश ने संस्कृत साहित्य में एक नई परम्परा को जन्म दिया हे। मेघदूत में कालिदास ने यक्ष के द्वारा मनुष्यमात्र के लिए जीवन के चिरन्तन सत्य की ओर संकेत किया है। प्राय: दु:ख के समय मनुष्य चिन्तित होकर हताशा की अनुभूति करता हैं। ऐसे ही अवसर पर मेघसन्देश की निम्नलिखित पंक्ति मनुष्य को सान्तवना देती है।

"कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दु:खमेकान्ततो वा, नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण ॥"

प्राय: ऐसा देखा जाता है कि विरह में प्रत्येक मानवी निराशा का अनुभव करने लगता है और उसे प्रेम का दीया बुझता हुआ सा प्रतीत होने लगता है। कालिदास ने यक्ष के सन्देश द्वारा हमे बोध दिया है कि प्रेम से जीवन पवित्र, सुन्दर और सार्थक अर्थात् सत्यम् शिवम्, सुन्दरम् बन सकता है। मानवीय प्रेम के द्वारा ईश्वरीय प्रेम भी हदय में जागृत किया जा सकता है। सन्देश काव्य में सहदय पाठक कवि के विचारों को हदयंगम कर अपने जीवन में उसका सदुपयोग कर ही सकते हैं। मेघसन्देश के अतिरिक्त विरहपरक अन्य सन्देश - काव्यों मे भी जीवन - सम्बन्धीत शाश्वत अनुभूतियाँ दष्टिगोचर होती हैं। यही जीवन की परम सिध्दि हैं।

शंकराचार्य का युग प्रवर्तक बोध

- प्रा. सुरवीरसिंह ठाकोर
आर्ट्स एण्ड कोमर्स कोलेज, ओलपाड- सूरत

युग अर्थात नियत समयावधि, कालखंड के रुपमें हम प्रस्तुत करते हैं।और युग शब्द वैश्विक संदर्भ में भी, अत्यंत वृहद् कालमान के रुप में भी स्वीकृत किया गया है। और बोध का अर्थ यदि उपदेश, मार्गदर्शन करेंगे तो वह समाज सुधारणा का प्रतिनिधित्व भी करता हैं। साहित्यकार समाज सुधारक भी है। समाजके उन ज्योतिर्धरोमें जगद्गुरु शंकराचार्य का नाम अवश्य अग्रिम रहेगा। शंकराचार्यजी ने जगत में फैली धर्म की ग्लानी, अधार्मिक वृत्ति - प्रवृत्तियाँ, जड यज्ञयागादि के साथे समाजमें फैली असामाजिक कुनिति - रीतियो को रोककर कृष्णकी भाँति धर्म की स्थापना के लिए सीमाचिह्न रुप कार्य किया था। उनके कार्योका प्रतिविम्ब साहित्यके माध्यम से समाज तक पहुँचता है, जो आज भी युगप्रवर्तक बने हुए हैं।

श्रीमद् भगवद्गीता और उपनिषद में युगबोध

डॉ.अशोककुमार एल. पटेल
अखंड आनंद आर्ट्स एण्ड कोमर्स कोलेज, सूरत

विश्व साहित्य में प्राचीनतम यदि कोई साहित्य है, तो वह वेद साहित्य है।उपनिषद वैदिक साहित्य का अंतिम भाग है। वह ईश्वरीय ज्ञान है। उसमें उचित स्थान पर आत्मा - परमात्मा , प्रकृति, समाज - संगठन, धर्म - अधर्म, ज्ञान - विज्ञान एवं जीवन के मूलभूत सिद्धांतो का बोध देनेका कार्य युगों से परंपरागत रुपसे येनकेन प्रकारेण चलता आया है। सृष्टि के समस्त देवी - देवताओंकी उपासना, उनके कार्यो की प्रसंशा करते हुए हमारे ऋषिमुनिओंने युगारंभसे ही बोधगाथा का गान किया हैं।

साहित्य और समाज जीवनरुपी गाडीके दो पहिए है। ऋषि - मुनि के काल से गुरु - शिष्य प्रणाली चलती आयी है। जीवन के चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से मनुष्य किसी एक की तीव्र आकांक्षा रखता है, उसके पीछे पडा रहता है, इस आकांक्षाको की पूर्ती करने के लिये उसके पास साहित्य ही एक आधार है। ऐसे में इस अथाह सागर जेसे संस्कृत साहित्यमें वेद से लेकर समस्त शास्त्र, रचनाए पारंपरिक नीत - नये सुबोध संदेश देते हें। उनमें से श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्री कृष्ण ने जो उपदेश अर्जुन को दिया है उसका अनुसरण और संस्करण दिखाई देता हैं। उपनिषद में भी परब्रह्मविद्या की प्राप्ति, उसका स्वरुप, जीव, आत्मा, जगत संबंधित विषयोंका बोधगान गाया गया है। ऐसे प्रमुख उपनिषद : इश, केन, कठ, प्रश्न, माण्डुक्य, तित्तरी, ऐतरेय, छान्दोग्य, वृहदारण्यक आदि हैं।

इस प्रकार युगों से संस्कृत साहित्य समस्त जीवों के लिये जीवन जीने की कला और बोध, विरासतमें देता रहा है यह निर्विवाद है।

संस्कृत नाटकोंमें निरुपित संघर्ष तत्त्व

प्रो. दीपक जी. पटेल
एस. बी. गार्डा कॉलेज, नवसारी

संस्कृत साहित्य में परंपरासे अन्य साहित्य विधाओंसे नाटकादि विद्याओंकी श्रेष्ठता स्वीकृत है - काव्येषु नाटकम् रम्यम् । इस नाटकादि विद्याओंकी श्रेष्ठताका कारण दिखाते हुए उसे भरतमुनिने दृश्यश्राव्यात्मक कहा है । दु:खसे संतप्त लोगों के लिये आनंद प्राप्तिका एक साधन या खिलौना (क्रिडनीयकं) भी कहते है । कालिदास भी उसे देवोंका हिंसाविहिन यज्ञ कहते है साहित्य की अन्य विद्याओंकी तुलनामें संवाद वस्तुग्रथन, भाषाशैली आदि दृष्टिओंसे नाटकादि प्रकार श्रेष्ठ हैं । पाश्चात्य साहित्य शास्त्रीओं की विचारशैली के अनुसार नाटकादि में निरुपित संघर्षतत्वका निरुपण उसे अन्य साहित्य विद्याओंसे श्रेष्ठता अर्पित करता है । शायद इसीलिये भारतीय विवेचकोंको कालीदासके अभिज्ञान शाकुन्तलम् का चौथा अंक अधिक हृदयंगम लगा होगा और पाश्चात्य विवेचकों को संघर्षतत्वके निरुपण के कारण पाँचवा अंक अधिक रोचक लगा होगा । संस्कृत नाटकोंमें संघर्ष तत्वका निरुपण ही नही है ऐसा भी नहीं है संस्कृत नाटकोंमें संघर्ष तत्त्व का तो है ही, हाला कि उसका उद्देश अलग है । जहाँ पाश्चात्य साहित्यमें सत और असत् (नायक और खलनायक) के बीचका संघर्ष निरुपित है वहाँ संस्कृत नाटकोंमें सत ओर सत के बीचका संघर्ष के निरुपित है श्रीमद्भगवद्गीता के अर्जुन के व्यामोह से तुलना की जा सकती है जिस प्रकार अर्जुन के लिये क्षत्रियोचित धर्मयुध्ध करना उसका धर्म - कर्तव्य है उसी प्रकार अपने स्वजनों की रक्षा करना भी उसका कर्तव्य - धर्म है इस प्रकार यहाँ पर धर्म - धर्म या सत् और सत् के बीचका संघर्ष है ।

कवि कुलगुरु कालिदास की नाट्यकृतिओंमें जीवन दर्शन

प्रा. रेखाबहन एम. पटेल
श्री एस.बी. गार्डा आर्ट्स और
पी.के. पटेल कॉलेज ऑफ कॉमर्स कॉलेज, नवसारी

महाकवि कालिदास हमारे विश्वविदित महाकवि है । संस्कृत साहित्य कालिदास के यशस्वी साहित्यिक प्रदान से समृध्ध और उज्जवल हुआ हैं । कालिदास की नाट्यकृतिओं में उनका भव्य जीवनदर्शन हम देख शकते है । कालिदास रसराज शृंगार के कवि और मानवप्रणय के महान उद्गाता है । किन्तु उनका जीवनदर्शन जो कुछ दिखता है उनसे कुछ निराला ही है । कालिदास ने अपने नाटक में कामवृति के कारण देहाकर्षण और ईन्द्रियार्थ प्रेमका निरुपण किया है जीवनमें काम के बल को कवि अच्छी तरह जानते है ।कालिदास ने अपनी नाट्यकृतियों में प्रणय के एक ही विषय को प्रधानतया निरुपत किया है । फिर भी अनेक निरुपण में विशिष्ट प्रकार का दर्शन प्रकट हुआ है ।शरीर और ईन्द्रियों के आकर्षण से उत्पन्न प्रणय को कालिदास स्वीकार करते है लेकिन काम के आगे वो प्रणिपात नही करते । काम के बल से हुआ मिलन आधूरा हैं, वों वयक्तिलक्षी प्रेम है । अत: उनसे आत्मा का मिलन नहीं होता ।

कालिदासके प्रणयभाव की एक दूसरी विशिष्टता हैं - पुत्रप्राप्ति में पूर्ण होती दाम्पत्यजीवन की धन्यता । विरह में तपकर शुध्ध और निर्मल हुआ दाम्पत्यजीवन जगतको कुमार आयुष, कुमार सर्वदमन (भरत) जैसे वीर प्रतापी पुत्रों की भेट धरते है । कालिदास के पात्रोमें रही तात्विक गहराई और सच्चाई ही उनका विकास साधती हैऔर उन्ही प्रेम में सुसंवादिता रहे ऐसेउत्तम और आदर्श दाम्पत्य का निर्माण होता है । कालिदास का यह दर्शन एक युग का नहीं अनेक युगोंसे चली आ रही विचारधारा का शाश्वत प्रतिबिंब है ।

रामायण में वर्णित आदर्श राजनीति

प्रा. श्रीमती जयदेवी रे. सं
जे.एम. शाह आर्ट्स एन्ड कॉमर्स कॉलेज, म

रामायण को भारतीय संस्कृति का विश्वकोष माना जाता है। रामायण को धार्मिक ग्रंथ के साथ - साथ सामाजिक ए राजनीति से संबंधित विचारों और आदर्शों का मुख्य स्रोत माना जाता है। श्री वाल्मीकि रामायण में वर्णित राज्य और रा व्यवस्था धर्म नियंत्रित, निष्पक्ष और समानता के सिद्धांत पर आधारित थी, जिसमें सर्वे सुखीन : सन्तु की भावना स्पष्ट होती है। धर्मयुक्त राजनीति के फलस्वरूप प्रजा सुखी, संपन्न, स्वधर्मनिष्ठ, ईश्वर परायण और उदार थी। राम राज्य में शासन धर्म नियं और युद्ध के स्थान पर शांति को महत्व दिया जाता था। राजा का प्रधान कर्तव्य प्रजा के योग - क्षेम का रक्षण करना रहता था। महात्मा गांधी की आदर्श राज्य की परिकल्पना को रामराज्य नामाभिव्यक्त किया गया है।

रामायणमें आदर्श राजनीति के परिप्रेक्ष्य में राजा का अधिकार और कर्तव्य, राजा की नियुक्ति, शासन व्यवस्था, र व्यवस्था, अर्थ व्यवस्था, आंतर राज्य संबंध आदिको लेकर उत्कृष्ट विचार अभिव्यक्त होते हुए नजर आते हैं।

महाभारत में वर्णित राजनीति

प्रा. नयना डी. आमोदवाला
जे.एम. शाह आर्ट्स एन्ड कॉमर्स कॉलेज, अंबुसर

महाभारत हमारी प्राचीन भारतीय शासन प्रणाली और राजनैतिक विचारों का स्रोत है। महाभारत में दंडपाणि, राजधर्म शासन प्रणाली आदि सभी विषयों के संबंधमें महत्त्वपूर्ण विचार मिलते हैं। महाभरतमें वर्णित राजनीति का विवरण निम्नलिखित हैं।

१). राज्य का स्वरुप : महाभारतमें राज्यको सप्तांग कहा गया है - जैसे राजा, अमात्य, कोष, दंड, सेना, जनपद, मित्र।

२). राजा के अधिकार और कर्तव्य : महाभारतमें भीष्म ने राजधर्म की व्यवस्था का प्रतिपादन करते हुए कहा - राष्ट्र का प्रथम कर्तव्य राजा का विधिवत् अभिषेक करना हैं।

३). शासन व्यवस्था : भीष्म के अनुसार शासक का प्रमुख कार्य प्रजा की रक्षा और उसका सुख है। व्यक्ति अपने कर्तव्य का पालन करें यही मुख्य उद्देश्य हैं।

४). कर व्यवस्था : भीष्म पितामह के अनुसार राज्य के सात अंगो में कोष महत्त्व पूर्ण अंग है। प्रजा पर कर लगाकर धन संग्रह करना चाहिए।

५). दण्ड व्यवस्था : न्याय और दण्ड राजा का प्रमुख कर्तव्य माना गया है।

६). युध्ध और सैन्य व्यवस्था : महाभारतमें रथारोही, गजारोही, अश्वारोही नौकारोही, पायदल, भारवाहक, गुप्तचर और उपदेशक आदि सैना के आठ भाग बताए गए हैं।

७). दूत व्यवस्था : दूत की योग्यता - स्थिर, भाव - विनय एवं धैर्य रखने वाला साहसी, निरोगी, उच्चकुलीन आदि।

શ્રીમદ્ ભગવદ ગીતા નો પ્રવર્તમાન સમયમાં યુગ બોધ

પ્રા. જિજ્ઞાસાબેન કે. ચાવડ
સત્યમ્ કોલેજ ઓફ એજ્યુકેશન મહિલા બી.એડ્. કોલેજ. ભરૂ
મો. ૯૪૨૬૮ ૫૩૬૬૧

વિવેકાનંદ કહેતા હતા કે ગીતા એક સુંદર પુષ્પમાળા કે ચૂંટેલા સર્વોત્તમ એક પુષ્પગુચ્છ સમાન છે. વિજ્ઞાન અને ટેકનોલોજીની એકવીસમી સદીના યુગમાં જ્યારે માનવ - માનવ મટીને યંત્ર માનવ બની ગયો છે. ત્યારે શ્રીમદ્ ભગવદ્ગીતાએ દરેક મનુષ્યને જ્ઞાન - કર્મ અને ભક્તિના ત્રિવેણી સંગમ અંગેનો નવીન દ્રષ્ટિકોણ આપે છે. ગીતા મનુષ્ય જીવનના દરેક ક્ષેત્રને સ્પર્શે છે. માટે જ શ્રીમદ્ ભગવદ્ગીતાએ માત્ર હિન્દુ ધર્મનો ગ્રંથ છે એમ કહેવું યોગ્ય નથી. કારણકે ગીતા એ માનવને ખરા અર્થમાં માનવ બનાવનાર મહાન ગ્રંથ છે. એ દ્રષ્ટિએ ગીતાએ જીવન દર્શન છે. માનવ જીવનની તમામ સમસ્યાઓનું સમાધાન ગીતામાં છે. મનમાં દઢ શ્રદ્ધા હોય અને સમાધાનવૃતિ આપણામાં વિકસી હોય તો જીવનનો એવો કોઈ પ્રશ્ન નથી કે જેનું સમાધાન ગીતામાં ન હોય. ઉપરની તમામ બાબત પ્રવર્તમાન સમાજના દરેક માનવને સ્પર્શે છે કારણ કે આજનો માનવી દિન - પ્રતિદિન સ્વ કેન્દ્રિત બનતો જાય છે ત્યારે ગીતાને શરણે રહી માનવ સ્વ કેન્દ્રી નહીં પરંતુ સમષ્ટી કેન્દ્રિ બની શકે છે. માનવી કોઈપણ કર્મ માત્ર ને માત્ર ફળ પ્રાપ્તિની ઈચ્છાથી કરે છે. ગીતા મનુષ્યને સાચા અર્થમાં કર્મનું મહત્ત્વ સમજાવે છે માટે જ શ્રી કૃષ્ણએ ગીતામાં વારંવાર કહ્યું છે કે કર્મ કરો પણ ફળની આશા ક્યારેય ન રાખો કારણ કે ઈશ્વર સારા કર્મનું ફળ માગ્યા વગર જ આપતા હોય છે.

वेदमें प्राप्त मानव बोध

प्रा. शिवरामभाई डी. गांवित
श्री स्वामिनारायण आर्ट्स कोलेज, अहमदाबाद

मनुष्यके चारित्र्य की बडी ही उच्च नैतिक अवधारणा एवम् आदर्श हमें वेदोमें दिखाई देते हैं। वेद हमें निरंतर उपदेश देते हैं कि सभी के साथ प्रेम एवम् मैत्रीपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। वैदिक द्रष्टिकोण बडा विशाल है मनुष्यको उसका प्रेम पडोशी, रिस्तेदार या किसी धर्मविशेष देश तक सीमित रखनेका सन्देश नहीं देता, परन्तु वे तो समग्र मानवजातको अपने में समेट लेता है वैश्विक एकता ही वैश्विक शान्ति के लिए अत्यंत आवश्यक है।

मानवता को उच्च नैतिक स्तर पर ले जानेका तात्पर्य वेद का है। वेदमें अभिव्यक्त उपदेश किसी भी तरह के कुल, गोत्र, धर्म एवम् देश के भय को मिटाकर प्रत्येक मनुष्य जाति के लिए एक समान है। यही विश्व बंधुत्व की बुनियाद है। वैदिक मंत्रो का ध्येय मानवजात को ऊँचा उठाने का है। वेद हमें मानवता के उच्च शिखर तक ले जाता है धर्म का सही कार्य यही है। अगोचर अर्थ का अभ्यास किए बिना जीवन व्यतित करने से यर्थाथ प्रकाश की प्राप्ति नहीं होती। ऐसा उच्च शिक्षण दूसरी जगह कदाचित्त ही दिखाई देता है।

श्रीमद् भगवद्गीता की सुगबोध

प्रा. दक्षाबेन पी. पटेल
श्री एम. आर. डी. आर्ट्स
एण्ड इ.इ.एल. के. कॉमर्स कॉलेज, चीखली - ३९६ ५२१

श्रीमद् भगवद्गीता समस्त मानवसमाजके लिये मनुष्यजीवन का मार्गदर्शन करनेवाली मार्गदर्शिका है। जो प्रत्येक युगमें किंकर्तव्यविमूढोंका पथ प्रदर्शन करते हुए संजीवनी का कार्य करती है। गीता विविध परिस्थितिओं में मनुष्यको विविध प्रकारके आश्वासन देती है और जीनेकी प्रेरणा देती हुई जीवनको सफल बनाने का मार्ग दिखाती है।

श्रीमद् भगवद्गीता में अर्जुन, जिज्ञासु शिष्यों का एवं मोहग्रस्त जन साधारण का भी प्रतिनिधित्व करता है। विविध दोषोंसे घिरा हुआ हैं मनुष्य परिस्थितिओंका सही मूल्यांकन नहीं कर सकता। दोषों के आवरण से उसकी विवेकशक्ति नष्ट हो जाती है। अगर उसमें थोडी सी भी जागृति है कि जिससे वह इतना तो समज पाता है कि मैं गलत हूँ या गलत हो सकता हूँ, कहीं कुछ गरबड है, तब वह किसी महापुरुष की शरणमें जाता हैं।

शरणागत अर्जुन को जो ज्ञान श्री कृष्ण से मिला है, जो भगवद्गीतामें अभिव्यक्त है, वह मनुष्य के जीवनमें पग - पग पर उपयोगी सिद्ध होता है। चाहे वह ज्ञानमार्ग हो, भक्ति, कर्म या योगमार्ग हो सही दिशा के मार्गदर्शन से मनुष्य अपने लक्ष्यकी ओर तेज गति से आगे बढ़ता है।

श्रीमद् भगवद्गीता किसी भी काल में, जगत के किसी भी मनुष्य के लिये जीवनोपयोगी हैं, क्योंकि गीता में शाश्वत मूल्योंकी बात की गई हैं।

"अभिज्ञान शाकुन्तल" की शकुन्तला भारतीय नारी समाजका प्रतिबिंब

प्रा. रमीला बी. नायक
श्री एम. आर. डी. आर्ट्स
एण्ड इ.इ.एल. के. कॉमर्स कॉलेज, चीखली - ३९६ ५२१

गृहस्थ जीवन का माधुर्य स्त्री पर निर्भर होता है। वैसे भी जीवन रथके चालक स्त्री और पुरुष एक दूसरे का अभिन्न अंग, बल्कि एक दूसरे के पूरक होते हैं। भारतीय समाज नारीको देवी, शक्ति, वामा, रमा, पुत्री, नारी अबला, प्रमदा, रमणी, वनिता, कांता, कामिनी, अंगना, महिला, दयिता आदि अनेक नामों से पुकारता है।

नारी - चरित्र के विविध पहलुओंका सफलतापूर्वक चरित्रांकन करने में कुशल कविश्रेष्ठ कालिदासने शकुन्तला की जो प्रतिमा शाकुन्तलमें अंकित की है, वही हमारी भारतीय संस्कृति की सच्ची पहचान है।

भावि आदर्श समाज की जन्मदात्री, स्त्री ही होती है। समाजको उसका परिशुद्ध स्वरूप ही स्वीकार्य होता है। समाज की सर्वांगी उन्नतिका आधार, अच्छा नागरिक होता है, और अच्छे नागरिक की जन्मदाती माता का चारित्र्य शुद्ध एवं पवित्र होने से ही वह संतानमें भी अच्छे संस्कारोंका बीज बो सकती हैं।

यदि भारतको भरत जैसे अच्छे नेतृत्व की जरूरत है तो उसकी माँ का केवल प्रेयसीका स्वरूप और वह भी भौंरे जैसे राजा की तीसरी, चौथी रानी बनकर रहनेवाली प्रेयसी - यह कवि को मंजूर नहीं है। इसलिये उसे विरहके ताप तपाया गया है तापसे उसको कंचनकी तरह शुध्ध किया गया है। प्रेम की मानों परीक्षा ली गई है। परिणाम स्वरूप इस प्रेमको एक ऊँचाई प्राप्त हुई हैं।

गीतामें वर्णित युध्ध हिंसक या अहिंसक

प्रो. मिनाक्षीबेन अेम. पानवाला
वी.ऐस. पटेल कॉलेज ऑफ आर्ट्स
एण्ड सायन्स, बीलीमोरा

यह तो सभी ईश्वरवादी लोग मानते है कि परमपिता परमात्मा कल्याणकारी है, वे प्रेमस्वरुप तथा शक्तिस्वरुप है। लोग गीता का पठन मन की शांति के लिए ही करते है। तब भला यह कैसे हो सकता है कि भगवान ने जो गीता ज्ञान दिया था उसको सुननेवालों ने उस ज्ञान को सुनते ही मार - काट वाला युद्ध शुरु करदिया हो। चाहे व्यक्ति कोई भी धर्म में आस्था रखता हो, वह भगवान को सुख - शांति का दाताही मानता है। तब सोचने की बात है कि क्या भगवान ने इस धरा पर अवतरित होकर एक दूसरे को बाण, गदा या शस्त्र से पीड़ा देने वाले युध्ध के लियेउपदेश दिया होगा ? सभी आस्तिक लोग परमात्मा के पतित - पावन मानते है; उससे तो वे विषय - विकार मिटाने के लिये प्रार्थना करते है। अतः परमात्मा की वाणी तो मनुष्य को निर्विकार बनानेवाली होगी ; वह द्वेष, घृणा या क्रोध पैदा करनेवाली नहीं बल्कि आध्यात्मिक स्नेह संपन्न बनानेवाली ही होगी।

परंतु आज जो गीता शास्त्र उपलब्ध है, उसका प्रथम अध्याय पढ़ने से ही मालूम होता है कि स्वयं परमात्माने भी अपने प्रिय अर्जुन को एक भयंकर युध्ध के लिये उत्तेजीत किया, उसकी अहिंसा वृत्ति का हनन किया, उसके बाहुबल एवं शस्त्र - बल द्वारा भारतवासीयों का महासंहार कराया तथा पांडवो कोछल, कपट और अमर्यादा का प्रयोग करने तथा निर्धारीत नियमों का उल्लंघन करने की मति दी। क्या हमारा विवेक इस बातको मानती है कि भगवान ने ऐसा किया होगा। गीता में ऐसे कई प्रमाण है जिसके आधार से यह स्पष्ट होता है कि गीता में वर्णित युध्ध अहिंसा का ही द्योतक है।

YOGA FOR PERSONALITY DEVELOPMENT

Dr. Jaymal S. Naik
M.R. Desai Arts & EELK Commerce College,
Chikhli, Gujarat, India.

Regular practice of yoga helps in attaining physical and mental fitness, the basic prerequisites for overall personality development. Yoga is an ancient art based on an extremely subtle science, that of the body, mind and soul. Yoga is more than just a form of exercise; it is a holistic experience that benefits the body, mind and spirit. " The body is your temple, keep it pure and clean for the soul to reside in." In the science of yoga there is a two - way approach: the practice and the concept. Both are essential forage development of personality. Concept helps man to follow the practice with shraddha (faith) and practical experience is useful to understand the concept in subtle ways. In this article let us see basic but very important concepts of yoga, which are useful to develop the internal personality of man.

The Relationship between Man & Nature in Atharvaveda

Minu R. Desai
M.R. Desai Arts & EELK Commerce College,
Chikhli, Gujarat, India
E-mail : minu251956@gmail.com

Like Rgveda the Atharvaveda also holds a very special position in the Vedic literature on account of its varied and unique contents. It is called the Veda of the masses for its more close relation with the common man and life.

The basic elements namely अप्, तेजस् , वायु and आकाश are held with relevance by the Atharvavedic seers. Today the environmental problems have become the focus of discussion everywhere. So far as our country is concerned, we have an enormous amount of literature begining from the Rgveda till today and has established various relationships with the natural elements. The Atharvaveda has a special status in the span of Vedic literature. It is said to be the Veda of the masses. It contains the expressions of all kinds from mundane to highly philosophical type. Ordinary man and his environment seems to have occupied the central place in the Atharvaveda. Thus, the Atharvaveda is the most significant Veda after the Rgveda.

Human attitude towards nature is seen generally of two types : dominating and submissive. A man has been aware of the fact that he is part of the globe. In ancient literature man has established various relationships with natural elements. Natural elements were treated by vedic people as their own family members.

Key Words : Man, Nature, Atharvaveda

गुप्तकालीन सुवर्णयुग और कालिदास रचित साहित्यकृतियाँ

प्रा. इंदुबेन जी. पटेल
प्रा. चेतन पटेल

इतिहासका कार्य समाजको यर्थाथका दर्शन कराना है। तो साहित्यका कार्य उस यर्थाथको काल्पनिक मददसे पुन: समाज तक पहँचाकर उसे आनन्द के साथ नई सच्ची राह दिखाना भी होता है।

गुप्तकालीन इतिहास तत्कालीन समय के भव्यातिभव्य समाजको उभारकर इस बात का इंगित करता है कि उस समय स्त्री का सम्मान, आबाल वृध्य के प्रति स्त्री का व्यवहार, राजधर्म, आदि अनेक बाते है जो कालिदास के कथानकोंके पात्र, संवाद, प्रसंग, आदि से प्रतीत होते है।

निर्दोष के प्रति राजा का व्यवहार मृदु ही होना चाहिए तथा दण्डित को माफी मिलनी नहीं चाहिए। शाकुन्तलका नायक राजा दुष्यंत को एक तापस भी रोक कर कह सकता है कि 'राजन न हन्तव्य न हन्तव्य !' ब्राह्मणो का समाजनमें महत्त्वपूर्ण स्थान था, सिर्फ इतना ही नहीं उसके कर्तव्य प्रति अंगुलि निर्देश कर सकने का उसे वाणी स्वातंत्र्य भी था।

प्रजापालक राजा को अपना राजा होने का अहंकार, मुगट आदि प्रतीकको त्यागकर विनम्र बनकर ही सबकी सेवा करनी है। इतना ही नहीं उसे प्रजापालक का पाठ पढाने ले लिए पहले गोपालक बनकर सेवा किस प्रकार की जाती है वह भी सिखना है। राजनीति के अलावा ऐसे कई पहलु है। भारतीय समाज आज भी अक्षुण्ण रुप से रखा है उसका कारण उसके संस्कार, समाज के अच्छे रीति - रिवाज हे। इतने सालों के बाद भी वही समान और वही सच्चाई है जिसे अपनाने पे आज का युग भी सुवर्ण युग बन सकता है। समाजकी हरेक बातको स्पर्शता कालिदासका साहित्य समाज का दर्पण है।

संस्कृत सूक्तिओं में समाजदर्शन

श्रीमती वंदना एम. प्रजापति
एच.आर. शाह आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कोलेज, नवसारी

मानव ऐसा प्राणी है जिसका सदैव एक - दूसरे से किसी न किसी तरह का व्यवहार विनिमय, विचार विनिमय, अनुभव विनिमय होता रहता है। ऐसे अनेक प्रसंगोके माध्यम से समर्पित करता है। ऐसी अनुभववाणी को हम सुक्ति, मुक्तक, विचारकणिका के रुप में पहचानते है। उन सूक्तिओं में मानव समाज तथा समाज से जुडे सभी छोटे बडे मानवी उनकी आचार विशेषताएँ वैयक्तिक या समाज मूल्यों को उद्‌घाटित करती हैं। यहाँ पर मानव समाज की मानवमूल्यों की शाश्वत सत्यको उजागर करनेवाली अनुभूतवाणी को प्रस्तुत करके समाजके अनेक मूल्य, अनेक समस्याएँ ऐसी है जो युगपरिवर्तन गया है। यथा धन के विषय में - युग परिवर्तन उपरांत भी धनका मूल्य कम नहीं हुआ, बढता ही गया। उसे भगवान तुल्य तो कभी भगवान से भी ज्यादा शक्तिशाली दिखाया गया। भर्तुहरि कहते है - सर्वे गुणाः वदांत आश्रयन्ते। जिसके पास धन, ऐश्वर्य, सत्ता, रुप, वैभव है वह गुण नहीं, चारित्र्य नहीं फिर भी वह मानव समाजमें सबसे ऊँचे औधे पर रहेगा क्योंकि वह पैसे से अपना सबकुछ खरीद सकता है। समाज के साथ जुडे अनेक विषयो में विषय विषय पर चिंतन प्रस्तु करनेका नम्र प्रयास है।

राधाचरितम् महाकाव्यमें समाजदर्शनः शिक्षाके संदर्भमें

पटेल रवि रमेशभाई
शोधछात्र
श्री एम . आर. डी. आर्ट्स एण्ड
ई .ई. एल. के. कॉमर्स कॉलेज, चीखली

प्रस्तुत शोधपत्रमें डॉ. हरिनारायण दीक्षितजी के राधाचरितम् नामके महाकाव्यमें राधा के पात्र द्वारा प्रदर्शित होता हुआ समकालीन समाज शिक्षा संबंधित दर्शनको प्रस्तुत करने का मैंने प्रयास कीया हैं। सुशिक्षित राधा श्रीकृष्ण के विरहमें निष्क्रिय बने हुए व्रजवासीयों को सक्रिय करने के लिये प्रवृत्त होती है। सभामें अपना वक्तव्य भी वह देती है। राधाके पास व्रजवासीजन कई बार अपने कुछ प्रश्नो के समाधन के लिये आते हैं। राधा यशोदाजीको समजाती है कि नारी के प्रति निम्न दृष्टिकोण शिक्षा के अभाव के कारण ही है। जो शिक्षित है वह तो नारीको उच्च स्थान की अधिकारीणी मानते है। लेकिन जो अशिक्षित वहीं उसको स्वीकार नही करते। दीक्षितजी राधा के वकतव्यमें कहते है कि बालक, युवा और बुढे की शिक्षा को बढावा देना चाहिये। सर्वशिक्षा अभियान, रात्रीविद्यालयोकी स्थापना और शिक्षकोकी नियुक्ति आदि विषयो पर कवि के द्वारा लीखी गई बातें मैंने प्रकाशित की है। प्राचीनकालमे शिष्य गुरुके आश्रममें रहता था और शिक्षा प्राप्त करता था। स्त्री शिक्षा को कार्य उसके पिता द्वारा या बादमें पति द्वारा होता था। एवं स्त्रीको भी उपनयन आदि संस्कार दिये जाते थे। परंतु क्रमशः ये सब बाते समाजमें लुप्त हो गई थी। जो आजके युगमें पुनः स्त्रीशिक्षा पर जोर दिया जा रहा है। नारी चेतना को यहाँ पर दीक्षितजीने किस प्रकार प्रकाशित की है यह दिखाने का भी यहा प्रयास रहा है।

શતપથ બ્રાહ્મણ માં યુગબોધ

હસમુખભાઈ એમ. સોલંકી
શોધછાત્ર
શ્રી રંગ નવચેતન મહિલા આર્ટ્સ કોલેજ, વાલોડ
Mo.: 9909315795, E-Mail : hasmukhs10@gmail.com

ભારતીય સમાજના ધાર્મિક તથા સાંસ્કૃતિક મૂલ્યોના ભંડાર વૈદિક વાઙ્મયમાં જોવા મળે છે. વૈદિક સાહિત્યનો સર્વોપરી ગ્રંથ નિ:સંદેહ ઋગ્વેદ છે, પરંતુ તેના પશ્ચાદવર્તી સાહિત્યમાં આવતા મહત્ત્વપૂર્ણ ગ્રંથનું નામ શતપથ બ્રાહ્મણ છે. યજુર્વેદના બે બ્રાહ્મણ ગ્રંથ પૂર્ણ સ્વરૂપમાં પ્રાપ્ત થાય છે, જેમાં એક શુક્લ યજુર્વેદીય વાજસનેયી સંહિતાથી સંબંધિત તૈત્તિરીય બ્રાહ્મણ. વૈદિક વ્યાખ્યાનનાં ક્ષેત્રમાં શતપથ બ્રાહ્મણનું ઘણું મહત્ત્વપૂર્ણ યોગદાન રહેલું છે. અહીં શુક્લ યજુર્વેદનાં મંત્રો વિનિયોગ તથા યજ્ઞ પ્રક્રિયાથી સંબંધિત તેની વ્યાખ્યા કરવામાં આવીછે. શતપથ બ્રાહ્મણ યજ્ઞ, આધ્યાત્મિકતા, નિર્વચન, સાંસ્કૃતિક, ઐતિહાસિક, દાર્શનિક, પૌરાણિક તથા આખ્યાનની દ્રષ્ટિએ ખૂબ જ મહત્ત્વ ધરાવે છે. શતપથ બ્રાહ્મણનાં આખ્યાનો મુખ્ય રૂપે યજ્ઞ પર આધારિત છે. છતાં પણ આ આખ્યાનોથી નૈતિક, રાજનૈતિક, સાંસ્કૃતિક, સામાજિક બોધ પ્રાપ્ત થાય છે. આમ શતપથ બ્રાહ્મણનાં કેટલાંક મહત્ત્વનાં આખ્યાનોનાં આધારે પ્રસ્તુત સંશોધન પત્રમાં શતપથ બ્રાહ્મણ દ્વારા યુગબોધ રજૂ કરેલ છે. આ ઉપરાંત સંશોધન પત્રમાં શતપથ નામાભિધાન તથા કાલનિર્ણય તથા વિષયવસ્તુની સંક્ષિપ્ત રૂપરેખા આપવામાંઆવેલ છે. વર્તમાન સમયમાં માનવ જીવનની સમસ્યાઓના નિવારણ માટે શતપથ બ્રાહ્મણ કેવી રીતે બોધ આપે છે તેની રજૂઆત કરેલ છે.

ઉત્તરરામચરિતં માં યુગબોધ

જૈમિકાબેન કે. રાઠોડ
શોધછાત્ર
નવરચના સોસાયટી વલ્લભ વિદ્યાનગર
Mo.: 75020 96191, E-Mail : jaimika.solanki@gmail.com

"क्षणे क्षणे यन्नवतांमुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः ।"

આ કથનને અનુરૂપ મહાકવિ ભવભૂતિની ઉત્તરરામચરિતની રમણીયતાના તથા વિશિષ્ટતાના મને થતાં દર્શન પ્રમાણે પ્રસ્તુત શોધપત્રમાં ઉત્તરરામચરિતનો યુગબોધ જણાવવાનો પ્રયત્ન કરેલ છે. પ્રસ્તુત શોધપત્રમાં ભવભૂતિ જીવન, સમય અને કવનની સંક્ષિપ્ત કથા રજૂ કરીને ઉત્તરરામચરિતનું સંક્ષિપ્ત કથાવસ્તુ આપેલ છે. અહીં મહાકવિ ભવભૂતિ જે રીતે પોતાનાં વિચારો પ્રગટ કરે છે તે શબ્દશૈલીને આધારે ઉપદેશ દર્શાવેલ છે. અહીં રામ અને સીતાના માધ્યમથી દાંપત્યપ્રેમ અને અપત્ય પ્રેમની યશોગાથા જે રીતે ભવભૂતિ રજૂ કરેછે તે જણાવવાનો પ્રયત્ન કરેલ છે.

સાચો પ્રેમ આત્માનો પ્રેમ છે. તે અજર છે અને અમર છે સુખ દુ:ખમાં પણ એ સ્થિર છે. મૃત્યુ પછી પણ તે ઓસરતો નથી પરંતુ વધે છે. આ પ્રમાણે ઉત્તરરામચરિતનો યુગબોધ અહીં શોધપત્રમાં દર્શાવેલ છે.

कादम्बरीमें अभिव्यक्त युगबोध : क्रीडाओंके संदर्भमें

वैशाली जयदीपसिंह डोडिया
शोधछात्र
श्री रंगवधेतन महिला आर्ट्स कोलेज - बालिया

तेजी से बदलते हुए युग में मनुष्य जीतनी तेजी से विकसीत होता जा रहा हैं उतनी ही तेजी से शारीरिक एवं मानसिक रुप से कमज़ोर होता जा रहा हैं। मनुष्य के पास सभी तरह की भौतिक सुविधा होने के बावजुद भी वह शारीरिक एवं मानसिक तौर पर सुखी नहीं हे। इसलिए ही वह आनंद प्राप्ति के लिए अनेक प्रयत्न करता हैं।

क्रीडा आनंद प्राप्ति का एक ऐसा माध्यम हैं, जीन से शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार का आनंद मिल सकता हैं। कादम्बरी में भी एसी क्रीडाओंका वर्णन मलिता है, जो तत्कालीन समाज में प्रचलित थी जैसे कि ....

नृत्य क्रिडा : चंद्रापीड के जन्म के अवसर पर राज्य में बहुत बडे नृत्योत्सव का आयोजन किया गया था वे विविध उत्सवों एवं प्रसंगो के मौके पर अपने आनंद को व्यक्त करने के लिए लोग नृत्य करते थे।

सामाजिक महत्त्व : नृत्य क्रीडा के आयोजन का सामाजिक महत्त्व यह हे कि नृत्य करने वालों के साथ - साथ देखने वालों को भी आनंद मिलता हैं। नृत्य करने वाले व्यक्ति को शारीरिक स्वस्थता एवं मानसिक आनंद की प्राप्ति नृत्य क्रीडा के द्वारा मिलती हैं। चंद्रापीड के जन्मोत्सव के अवसर पर आयोजित वृहद नृत्योत्सव के माध्यम से समाज के लोग एक दूसरे के संपर्क में आते है, जिससे सहकारी भावना उत्पन्न होती हैं, सब लोग मिलकर आनंद उठाते है। समाज में रहने वाले श्रेष्ठ नर्तक नर्तकियों को सम्मानित किया जाता है, जिससे समाज का गौरव बढता हैं।

संस्कृत साहित्यमें युगबोध : उपनिषद के परिप्रेक्ष्यमें

पटेल भूमिकुमारी ए.
शोधछात्र

उपनिषद का अर्थ यही होता है कि गुरु के पास बैठकर गुढज्ञान को समझना उपनिषद जिज्ञासुओं, तपस्वीओं, भक्तों, एवं, ऋषिमुनीयोंकी सत्य के अन्वेषण के संदर्भ में अंतिम एवं यथार्थ अनुभूतिओंका दर्शन हैं।

उपनिषद का प्रमुख तात्पर्य जीव ब्रह्म को अभिन मानना और स्वाभाविक परमानंद के नित्य आर्विभाव में स्थिर रहना यही जीवन का प्रयोजन होता हैं। प्रत्येक उपनिषद् के आरंभ एवं अंत में शांति की भावना को अभिव्यक्त करते मंत्रोच्चार की परंपरा है जिन्हें शांतिपाठ कहते है।

समग्र सृष्टि का निर्माण परब्रह्म से ही हुआ हैं। ऐसा मानने वाले मृत्युंजय होते हैं। इस तरह कठोपनिषद् में आत्मा की चर्चा के साथ साथ मृत्युंजय बनने का रास्ता भी दिखाया गया है । मुण्डकोपनिषद में चित्रीत मुद्रालेख सत्यमेव जयते नानृतम (मु. उं. ३ - १ - ६) को भारतीय संस्कृति एवं हमारे देश ने हजारों सालों से विरासत के रुप में ग्रहण किया हैं। जिसने अपनी संस्कृति को विशिष्टता प्रदान की हैं।

उपनिषद अपने जीवन को सहज रुप में जीने का संदेश देता हैं, आत्मज्ञान प्राप्त करना, मनुष्य की महानता का रहस्य, आत्माब्रह्म स्वरुप है इसे पहचानो। अपने दृष्टिकोण को उँचा रखना, क्रोध एवं चिंता से बचना, कठिनाईयोंका सामना करने के लिए तैयार रहना, श्रेष्ठ कार्य करना, सुख प्राप्ति के लिए मन की शांति आवश्यक है। तप से ही कल्याण होगा।

બૌધાયન ધર્મસૂત્ર માં યુગબોધ

વસાવા જગદીશભાઇ ઈશ્વરભાઇ
શોધછાત્ર

ધર્મસૂત્રો માનવ જીવનના નૈતિક મૂલ્યો ને સુરક્ષિત તથા સુસંસ્કારિત કરવાનું કાર્ય કરે છે. ધર્મ વિનાના સંસારની કલ્પના દીવા સ્વપ્ન છે. મહર્ષિ બૌધાયને આજ થી સેંકડો વર્ષ પહેલા ધર્મસૂત્ર ની રચના કરી હતી. શ્રી પી. વી.કાણે બૌધાયન ધર્મસૂત્ર ની રચનાનો સમય ઈ.સ. ૨૦૦ થી ૫૦૦ ની વચ્ચે માને છે. આ ધર્મસૂત્ર માં તે સમય ના માનવ જીવનના વ્યક્ત ક્રિયા કલાપોને પ્રગટ કરવાનો પ્રયાસ થયો છે.

આ ધર્મસૂત્ર માનવ જાતિ નું માર્ગદર્શન કરવા માટે આધુનિક યુગ માં સક્ષમ છે. તે યુગ ના સામાજિક, રાજકીય, આર્થિક, શૈક્ષણિક અને ધાર્મિક જીવનના પાસાઓ વિષે તલસ્પર્શી માહિતીનું વર્ણન આ ધર્મસૂત્ર માં જોવા મળે છે. ધર્મસૂત્ર માં બૌધાયને પાણિનિ ને પણ યાદ કર્યા છે. આ ધર્મસૂત્ર માં ભારતીય સંસ્કૃતિ ના પ્રમુખ તત્વોનું દર્શન કરાવ્યું છે.

મનસ્મૃતિમાં યુગબોધ

પટેલ ધર્મિષ્ઠાબેન અરવિંદભાઈ
શોધ છાત્ર
શ્રી એમ. આર.દેસાઈ આર્ટ્સ એન્ડ ઈ.ઈ. એલ.કે કોમર્સ કોલેજ, ચીખલી

સદાચરણ કરનાર માણસ જીવનમાં દુ:ખી થાય અને પાપાચરણ કરનાર સુખી થાય આ સર્વકાલીન અને સર્વદેશીય પ્રશ્નનો મનુભગવાને આપેલું નિરાકરણ મનુસ્મૃતિમાં જોવા મળે છે. ભગવાન મનુના સમયમાં ગુરુ, માતા - પિતા અને સ્ત્રીનું સ્થાન ઉચ્ચ કક્ષાનું હતું અને આધુનિક યુગમાં તેઓનું સ્થાન આ પ્રમાણે જ રહ્યું છે. મનુના સમયમાં પશુ - પંખીઓનું મહત્ત્વ અને આધુનિક યુગમાં તેમનું મહત્ત્વ રજૂ કરવા માગું છું.

શકુન્તલાવિદાય યુગબોધાત્મક ચિંતન

વિભૂતિબેન વિષ્ણુભાઈ પટેલ
શોધછાત્ર
હેમચંદ્રાચાર્ય ઉત્તર ગુજરાત યુનિ., પાટણ

મહાકવિ કાલિદાસની 'અભિજ્ઞાનશાકુન્તલ' શીર્ષકથી સુપ્રસિદ્ધ નાટક માત્ર સંસ્કૃત વાઙ્મયનું અદ્વિતીય શોભા નથી. તે વિશ્વસાહિત્યનું બહુમૂલ્ય રત્ન છે.

અભિજ્ઞાન શાકુન્તલમ્ ના ચોથા અંકનું મુખ્ય કથાવસ્તુ શકુન્તલાવિદાયનું છે. શકુન્તલા વિદાય પ્રસંગમાં સાર્વજનિક અનુભૂતિનું નિરૂપણ થયું છે. કન્યાવિદાયના વસમાપણાનો અનુભવ સર્વકાલીન અને સર્વસ્થલીન છે. તેમ પણ આરે કે હૃદય નિચોવીને પોતાના સમગ્ર અસ્તિત્વનો રસ સમાજને રસ્તે ધરતો હોય તેવો કન્યાવિદાયનો પ્રસંગ ભારતીયોમાં તો વિશેષ કરીને અત્યંત વેદનાકારક છે. આમ હોવાથી જ આ નાટકના ચતુર્થ અંકમાં રેલાયેલા કરુણ ભાવો પિતાઓના સનાતન ભાવો છે. જેમાં યાસ્યત્યદ્ય શકુન્તલેતિ શ્લોકમાં શકુન્તલાવિદાયને કારણે ઋષિ કાશ્યપનું હૃદય ઉત્કંઠિત થઈ જાય છે. આંસુના પ્રવાહને રોકતા જતાં કંઠ રૂંધાય છે. ચિંતાથી આંખ જડતા ધારણ કરેછે. ત્યારે ઋષિ કાશ્યપ પોતે વિચારે છે કે જો મારા જેવા અરણ્યવાસીની પણ સ્નેહના કારણે આવી વ્યાકુળ પરિસ્થિતિ હોય તો પુત્રીના પ્રથમ વિયોગથી ગૃહસ્થીઓને કેવી પીડા થતી હશે ? મહાકવિ કાલિદાસે અહીં જે દીકરીના પિતાની હૃદયદ્રાવક વેદનાનું અતિઉત્કૃષ્ટ નિરૂપણ કર્યું છે. મહાકવિ કાલિદાસે ભારે કૌશલથી વિદાયના દુઃખને વેધક બનાવ્યું છે. આ અંકમાં કવિએ સૂચક રેખાંકનો દ્વારા વિદાયની આકૃતિને ઘેરી બનાવી છે. આ ભર્યા ભાદર્યા જગત વચ્ચે માનવીની આત્યંતિક એકલતાનો સનાતન ભાવ સમગ્ર અંકમાં પ્રગટી ઊઠે છે.

रामायणे युगबोध

पुनित मैतु
शोधछात्र
श्री रंगअवधूत महिला आर्ट्स कॉलेज,
वालिया - भरूच, गुजरात

संस्कृतं साहित्यं वैदिकलौकिकभेदेन द्विविधम् । वैदिकसाहित्ये संहिताषडङ्गब्राह्मणारण्यकोपनिषदादयः अन्तर्भवन्ति । लौकिके च दर्शनपुराणरामायणमहाभारतकाव्यादीनि समाविशन्ति । तत्र रामायणमहाभारतकाव्यादिग्रन्थानामध्ययनस्य उद्देश्यं प्रवृत्तिं निवृत्तिं प्रति मार्गदर्शनमपि आकर्षणमस्ति । संस्कृतसाहित्ये सर्वत्रैव श्रेयः प्रेयः प्रदायकत्वविलक्षणकारिता दरीदृश्यते । आदिकवि महर्षि प्राचेतसेन रचितं रामायणं हि मानवीयसंस्कृतेः सारभूतमस्ति । तच्छ्रेयोमार्गप्रदर्शकं ज्योतिः विद्यते । तत्सांसारिकव्यवहारोपदेशकाव्यानां वर्तते । तद्सदाचारधर्मप्रदर्शनपरं किमपि धर्मशास्त्रमस्ति । रामायणं मानवमनोगतभावानां प्रदर्शनकारिणी काऽपि अनिर्वचनीयैव प्रदर्शनी विलसति । तद्भारतीयानां संस्कृतेः समुज्ज्वलानां स्वाभाविकानां च चारुतराणां चित्राणां विचित्रमेव किमपि विशालं चित्रभवनम् उद्घोषयति । रामायणं वस्तुः न केवलं भारतस्य अपि तु विश्वस्य अद्वितीयः निधिरस्ति ।

રામાયણમાં આદર્શ કૌટુંબિક ભાવના

સ્નેહા કે. પટેલ
શોધ છાત્ર
શ્રી જે.પી.ઑફ આર્ટ્સ કોલેજ, વલસાડ

સંસ્કૃત સાહિત્યે રામાયણ અને મહાભારત જેવા બે અમૂલ્ય વીર મહાકાવ્ય આપ્યા છે. જેમાંથી સમગ્ર સંસ્કૃત સાહિત્યનું સર્જન થયું છે.

રામાયણનો મુખ્ય ઉદ્દેશ ભારતીય ગાર્હસ્થ્ય જીવનનું ચિત્રણ હોવાનું જ પ્રતીત થાય છે. રામાયણમાં ભારતીય આદર્શોના બલાબલનું પ્રતિબિંબ દેખાય છે. પિતા અને પુત્ર, પતિ અને પત્ની, ભાઈ - ભાઈ, રાજા અને પ્રજા, સ્વામી અને સેવક આવા ઘણા પ્રકારના સંસારિક દ્વંદ્વોમાં કેવા પ્રકારનો આદર્શ હોવો જોઈએ, સત્યધર્મનું પાલન, લોકકલ્યાણ તેમ લોકરંજનની ઈક્ષ્વાકુ વંશની પરંપરા કઈ રીતે સચવાય એ અંગે કેવો આદર્શ હોવો જોઈએ એ માટે સર્વ રામચરિત્રથી આપણને સારી રીતે સમજાય છે. રામ અને રાવણનું યુદ્ધએ પતિ પત્નીના પરસ્પરની દામ્પત્ય પ્રીતિને જ ઉજાગર કરી દેખાડવાનું સાધન માત્ર છે. જે આજના સાંપ્રત સમયમાં પણ આદર્શરૂપ બની રહ્યું છે.

આદિકવિ વાલ્મીકીને રામાયણ રચવાની વિનંતી કરતાં બ્રહ્માએ આશીર્વાદાત્મક આગાહી કરેલી કે; જ્યાં સુધી આ મહીતળમાં પર્વતો અને નદીઓ રહેશે ત્યાં સુધી રામની કથા લોકોમાં પ્રચાર પામ્યા કરશે. એ આગાહી સાચી પડી છે. રામાયણનો સ્ત્રોત હજી અખંડપણે ભારતમાં અને વિદેશમાં વહ્યા જ કરે છે. રામાયણ ભારતીય સંસ્કૃતિનો અમૂલ્ય ગ્રંથ છે અને યુગયુગાન્તર સુધી તેનો પ્રભાવ ભારતના લોકોના જીવન ઉપર પડતો રહ્યો છે.

માનવસમાજ નું શાશ્વત સત્ય

ભર્તૃહરિની નજરે

પટેલ ધર્મિષ્ઠા ટી.
શોધછાત્ર
શ્રી એમ. આર.દેસાઈ આર્ટ્સ એન્ડ ઈ.ઈ. એલ.કે કોમર્સ કોલેજ, ચીખલી

સાહિત્યકાર યુગદ્રષ્ટા હોય છે તો વડી તે યુગસૃષ્ટા બનવાની ક્ષમતા પણ ધરાવતો હોય છે. તેની વાણી સત્યની, ઋતની ઉપાસના દ્વારા જગતને સન્માર્ગે, પ્રેય અને શ્રેયના માર્ગે દોરવાનું હોય છે. મમ્મટ સાચું જ કહે છે કે સાહિત્યનો ઉદ્દેશ વ્યવહારવિદે પણ હોય છે. સાથે સાથે તે જગતને પરમાનંદ ની સાથે ઉપદેશ આપી, કાન આમળી પ્રિય પત્નીની જેમ વહાલથી ટપલી મારી કલ્યાણના માર્ગે દોરી પણ શકે છે. આવો જ સાહિત્ય દ્વારા કલ્યાણનો માર્ગ સાધનારો કવિ સાત વખત સંન્યાસ તો સાત વખત સંસાર ત્યાગી શકે તેનું અનુભવનું ભાથું તો કેટલું સબળ હશે ! તેમણે આપેલ સનાતન વ્યવહારિક સત્ય જે દરેક યુગમાં મહત્ત્વ ધરાવે છે. જેના વિના સમાજની કલ્પના કરવી માનવની માનવ તરીકેને કલ્પના જ અશક્ય બની જાય છે તેમનું વિદ્યા વિષયક ચિંતન. ભારતીય સંસ્કૃતિ માને છે **સા વિદ્યા યા વિમુક્તયે** તો વિદ્યાનું માનવ જીવનમાં કેટલું અને શા માટે મહત્ત્વ છે આ બાબતને અહીં રજૂ કરવાનો નમ્ર પ્રયાસ છે.

મોહરાજપરાજયમ્ માં નિરૂપિત યુગબોધ

પરમાર રીતેશકુમાર ડાહ્યાભાઈ
શોધછાત્ર
આર્ટસ એન્ડ કોમર્સ કોલેજ, વાલિયા

ઈ.સ. ૧૯૦૦ પૂર્વેના સોલંકી કાળના સર્જનો સંદર્ભે કવિ શ્રી યશ:પાલની કૃતિ મોહરાજપરાજયમ્ માં રૂપકાત્મક કથાવસ્તુ પાંચ અંકમાં પ્રસ્તુત કરવામાં આવેલ છે. જેમાં કુમારપાળના જૈન ધર્મના સ્વીકારનું ખ્યાતવૃત્ત છે. નાયક કુમારપાળ ઐતિહાસિક રાજપુરૂષ છે. અહીં સમાજજીવનને અહિંસા, સત્યપાલન, જૈનધર્મના ઉપદેશાત્મક જૈન સિધ્ધાંતોનો પ્રચાર , લગ્નની પૂર્વશરત રૂપ દ્યૂત, મદ્યપાન, પશુહિંસા, મારી વગેરેને રાજ્યબહિષ્કૃત કરવાનો નિર્દેશ કરવામાં આવ્યો છે. તેની સાથે જ સુરાજ્યસંચાલન, રાજ્યનો આર્થિક, સામાજિક અને રાજકીય સુધાર અને વિકાસ કરવાનો સીધો સંદેશ આપવામાં આવ્યો છે.

સાથો સાથ સમાજમાં જોવા મળતાં વ્યસનોનો વિરોધ કરી તેમને દૂર કરી આદર્શ સમાજ સ્થાપવાનો રૂપકાત્મક રીતે બોધ નિર્દેશીકરાયો છે.

ભારદ્વાજ ઋષિનો યુગબોધ

અર્ચના ડી. પટેલ
શોધ છાત્ર
આર્ટસ એન્ડ કોમર્સ કોલેજ, વાલિયા

ભારતીય ચિંતન ધારા આધ્યાત્મવાદી રહી છે. સંસ્કૃતસાહિત્ય વિશ્વસાહિત્યમાં સૌથી પ્રાચીન સાહિત્ય છે. સંસ્કૃત ભાષામાં રચાયેલ શ્રુતિ, સ્મૃતિ, મહાકાવ્ય, પુરાણ વગેરે હિંદુધર્મના તથા સંસ્કૃતસાહિત્યના પાયાના ગ્રંથો કહી શકાય અને તેમાં પણ વૈદિક ગ્રંથો એ સંસ્કૃત સાહિત્યમાં સર્વ પ્રથમ સ્થાન પામે છે.

ભારતીય સંસ્કૃતિ એટલે ઋષિ મુનિઓની સંસ્કૃતિ. પ્રાચીનકાળમાં ઋષિ પરંપરા આધારિત અધ્યન - અધ્યાપનકાર્ય થતું હતું. શૌનકાચાર્ય કહ્યું છે તેમ જેનું વાક્ય હોય તે ઋષિ કહેવાય. જે જ્ઞાન થી સંસાર પાર ઉતરી જાય તે ઋષિ.

વેદો એ અપૌરુષેય હોય પ્રાચીન ઋષિમુનીઓને તેના દ્રષ્ટા કહેવાય છે અને આવું પરમજ્ઞાન જે પરમેશ્વરી કૃપાથી તેમનેપહેલું વહેલું દર્શન કર્યું તેથી ઋષિ તરીકે ઓળખવામાં આવે છે. ઋગ્વેદના સંદર્ભમાં જોઈએ તો તેના ૧૦ મંડળના જુદા - જુદા ઋષિઓ છે. તેમાં મંડળ છ ના કર્તા ઋષિભારદ્વાજ તથા તેના વંશજો છે. ભરદ્વાજ ઋષિ અને તેમના વંશજોને ભારદ્વાજ કહેવાય છે. ભારદ્વાજ ઋષિના નામનો અર્થ આ રીતે થાય છે. નિરુક્તકાર ભરદ્વાજ શબ્દને ગુણબોધક માને છે. અને તેને આ રીતે સમજાવે છે કે ભરદ્વાજ એટલે બીજાને અન્ન આપે છે. અથર્વવેદ, સામવેદ માં પણ ભારદ્વાજ ઋષિ નો ઉલ્લેખ જોવા મળે છે.

વસાવા નિશાબેન જગદીશભાઈ
શોધછા
આર્ટસ એન્ડ કોમર્સ કોલેજ, વાલિ

याज्ञवल्क्यस्मृति માં યુગબોધ

યોગીશ્વર યાજ્ઞવલ્ક્યનું સ્થાન વૈદિક ઋષિઓની પરંપરામાં મુખ્ય ગણાયું છે. સ્મૃતિ એટલે પ્રાચીન કાળમાં રચાયેલા વૈદિક સાહિત્ય પછીના ગાળાનું અને ધર્માચરણને લગતું સાહિત્ય. સ્મૃતિઓનું ઉદ્‌ગમ સ્થાન ધર્મસૂત્રે છે સ્મૃતિઓનું સાહિત્ય ઘણું વિશાળ છે. મનુસ્મૃતિ પછી મહત્ત્વનું સ્થાન યાજ્ઞવલ્ક્ય સ્મૃતિનું છે. યાજ્ઞવલ્ક્ય સ્મૃતિને યાજ્ઞવલ્ક્ય સ્મૃતિમાં નિરૂપિત વિષયોનું ત્રણ ભાગમાં વિભાજન કરવામાં આવ્યું છે. ૧. આચારાધ્યાય, ૨ વ્યવહારાધ્યાય, ૩. પ્રાયશ્ચિત્તાધ્યાય.

યાજ્ઞવલ્ક્યસમૃતિમાં સામાજિક - સ્થિતિ વિશે વાત કરવામાં આવી છે. પ્રાચીન ભારતીય સમાજ વર્ણ અને જાતિમાં વિભાજીત હતો. સમાજનું આ વિભાજન સમાજિક, આર્થિક, રાજનીતિક, ધાર્મિક અને ભૌગોલિક પરસ્થિતિઓનું પરિણામ હતું. પ્રાચીન ભારતીય સમાજમાં ચાર વર્ણ હતા. બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય અને શુદ્ર. આ વર્ણોની ઉત્પત્તિ વિશે યાજ્ઞવલ્ક્યસમૃતિમાં વિચાર કરવામાં આવ્યો છે. આ ઉપરાંત સામાન્ય ધર્મ, વિશિષ્ટ ધર્મ, આપદ ધર્મ તેમ જાતિઓમાં અનુલોમ જાતિ, પ્રતિલોમ જાતિ અને ચાર આશ્રમો વિશે તેમજ સંસ્કાર વિશે વિગતે વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે

યાજ્ઞવ્લક્યસ્મૃતિમાં પારિવારિક જીવન, વસ્ત્ર આભૂષણ, મનોવિજ્ઞાનના સાધન વગેરે વિશે પણ વિસ્તૃત ચર્ચા કરવામાં આવી છે. શિક્ષણ સંબંધિત બાબત વિશે આપણે જોઈએ તો યાજ્ઞવલ્ક્યસ્મૃતિમાં શિક્ષણનું મહત્ત્વ શિક્ષણમાં સુધાર, શિક્ષણના વિભિન્ન કાર્ય, શિક્ષણનો અર્થ, શિક્ષણનો ઉદ્દેશ્ય અને આદર્શ, ગુરુ - શિષ્ય સંબંધ શિક્ષણના વિષયો વગેરે વિશે વાત કરવામાં આવી છે.

Begin Your Day With Prayer

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ॐ ॥

There is a Mantra called the Gayatri. It is a very holy verse of the Vedas. 'We meditate on the glory of that being who has produced this universe, may he enlighten our minds.'

- Mahanarayana Upanishad